दिव ती व अ ध्याय : जी वनी और व्य स्वतः
पूर्वकीय अवधाय

जीकनी और व्यक्तित्व

पहुँची अवधाय में महाराज व्यक्तित्व की समकालीन तथा पूर्वकीय काल की राजनीति, सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक तथा साहित्यक परिस्थितियों का सौंदर्य विकास प्रस्तुत किया गया है जो कि इस युग की विन्यास की चित्रीकरण, अभिव्यक्ति, बातचीत-आकाशा और राजनीति के एवं अनुसारांग के जीवन सत्ता विकासीय साहित्यिक आंदोलनों को प्रदर्शित करता है। इस में संदेह नहीं कि वे परिस्थितियाँ एक और महाराज के व्यक्तित्व एवं साहित्यक कृतित्व के विकास में सहायक हुई और दुसरे और इन्हीं गुरु(कब्ज़ा) से दीर्घकालीन साहित्यिक अनुभव को निरूपत गतिशील बनाने में महत्वपूर्ण कार्य किया। इस युग की साहित्यिक प्रवृत्ति एवं विकास महाराज व्यक्तित्व की साहित्यिक कृतियों के समुचित समयावधि के लिए जहाँ सहायक हो सकती है क्योंकि दुसरे और महाराज व्यक्तित्व की जीकनी और व्यक्तित्व का अनुभवन भी क्रांतिकारी अनेक महत्वपूर्ण तत्त्वों के अनुसारांग में सहायक हो सकता है। इस उद्देश्य को भाषाएँ में रक्रक महाराज व्यक्तित्व की जीकनी और व्यक्तित्व पर महत्वपूर्ण विचार के हेतु अत्यन्त आवश्यक है।

जीकनी

महाराज व्यक्तित्व की प्रामाण्यक एवं समूहों जीकनी उपलब्ध नहीं है। इतिहास और जनश्रुति के आधार पर अब तक नो कुछ भी लिखा गया है उसके कहीं कहीं परस्पर विरोधी तत्त्वों की समस्याओं का समाधान एवं प्रामाण्यक संबंध का अभाव-वाला दिलाशी पड़ता है। इसका कारण यह है कि कुछ इतिहास के अंतिम व्यक्ति विशेष की जीकनी के विस्तार में जाने की आवश्यकता इतिहासकारों ने अनुभव न की है। प्रस्तुत विशेष के अन्तर्गत प्रामाण्य और आपत्ति प्रमाणों के आधार पर उनकी जीकनी
के अनुसार यह प्रयास किया ना रहा है।

जन्म-वर्षः

Maharana Jyaptisindh के जन्म-वर्ष के विषय में प्रत्यक्ष उल्लेख कहीं प्राप्त नहीं होता। विदेशी एवं स्थानीय लेखकों के इतिहासों में उनके जीवन की महत्वपूर्ण घटनाओं के समय में उनकी आयु के विषय में जो उल्लेख मिलते हैं वे किवादास्फ़्त हैं। इन्हें संग्रह में इस प्रकार प्रस्तुत किया जा सकता हैः

(1) विदेशी परिवर्तन कार्यस्थल बॉस्टन के मलानुसार जब ज्यप्तिसिंह अपने पिता को जैद बुनक के सासक के तथा सन् १७४१ के जून में ३४ वर्ष की आयु के थे।

(2) "बम्बई गवर्नमेंट" के अनुसार ज्यप्तिसिंह के समय सन् १७६०-६१ के जून में ५४ वर्ष के थे।

(3) स्थानीय इतिहासकारों ने ज्यप्तिसिंह के जीवन की उत्तर-दक्षिण घटनाओं के संदर्भ में उनकी आयु क्लर्च ७४ और ४४ वर्ष की बतायी।

"Lakha: Sam vat 1798, 1741 A.D.: At the time the scenes occurred which closed the account of the last reign, Lakha or Lakhapati was 54 years of age."

( बम्बई संवत् १७४१, सन् १७४१ के जूनः जिस समय वे घटनाओं घटित हुई और अंतिम शासन का आत्त हुआ तब लाखा अर्थात ज्यप्ति जी ३४ वर्ष की आयु के थे।


२ "बम्बई गवर्नमेंट", वैं ५, पृ० १२१
इन उद्देश्यों से जो विवादास्पद तथ्य उपलब्ध होते हैं, वे इस प्रकार हैं—

1. स्वतंत्र इतिहासकारों के अनुसार ख्यातिशिष्ट का नन्द-वर्ष सन् 1535 ई. थी और उनकी कुल आयु 54 वर्ष की थी।

2. कभी के स्थानीय इतिहासकारों के अनुसार उनका नन्द-वर्ष सन् 1517 ई. था और उनकी कुल आयु 88 वर्ष की थी।

3. इस प्रकार उठने वाली उद्देश्यों में ठीक दस वर्ष का अंतर है।

चित्रित और स्थानीय इतिहासकार महाराज ख्यातिशिष्ट के नन्द-वर्ष में नीचकार के विचार में आधारभूत जानकारी प्रचुर नहीं करते। सन् 1535 ई. वाला ख्यातिशिष्ट की आयु 54 वर्ष थी और उनका उद्देश्य वाले वॉल्टर ने सन् 1617 में प्रकाशित किया "किंगफिशर" में लिखा था जिसके बाद के समय विदेशी इतिहास लेखकों ने प्राप्त हुआ। 8 स्थानीय लेखकों

2. (अ) "बशपत जी" एवं "बशपत जी" - 83 वर्ष की उम्र सन् 1525 मात्र स्वर्गवासी था। " (बशपत जी" 83 वर्ष की उम्र में सन् 1525 में स्वर्गवासी हुए। " कभी देशने इतिहास", पृ 50, देश भारत राजनीतिक जी दिखाई दी।

(आ) सन् 1525 मात्र महाराज जी देशने जी ने वेद करने 34 वर्ष के लिए बशपतीए कालिन राजनीतिय नायक के लिए, महादेव विजयना लक्ष्य धारण किये। वे फिर से विवेक और विश्वास और प्रेम भरे स्वागत दिए— "सन् 1525 मात्र महाराज जी देशने जी ने वेद करने 34 वर्ष के लिए बशपतीए कालिन राजनीतिक नायक के लिए, महादेव विजयना लक्ष्य धारण किये। वे फिर से विवेक और विश्वास और प्रेम भरे स्वागत दिए— "भक्ति हृदय", पृ 102, देश भारत राजनीतिक जी दिखाई दी।

4. (अ) "बशपत जी", बा० ५, पृ १४१
(आ) "दो सैकड़ हिस्स", पृ १३६
में से सविपुर्ण ज्यामित्ये भू की दिव्यविभूषण से सन् १७५६ में प्राप्तिक अपने " कपड़े देखना इतिहास" में उल्लिखित से भिन्न महाराज को 88 वर्ष की आयु में स्वयंवर दिखाना रिखिया किया है, परंतु उन्होंने " रिखिया " को देखने पर भी " न तील उसकी मान्यता का सूदन किया और न अपनी मान्यता को प्रसारित हो किया। इस स्थिति का कारण कपड़े के इतिहास लिखने में व्यक्ति विशेष की जीवन को दिखा गया अन्य महत्त्व है।

इसी स्थिति में प्राचीन शास्त्र बौद्ध के लेख को महाराजां व्यक्ति -
-सिवते के नीति के इस प्रारंभिक मुख्यत्व लिखने की स्थापना की दिवस में प्रज्ञा
होना पड़ा है। इस दिवस में उसने व्याख्या किया प्रसन्न करके पूर्णपूर्ण लोग
सामाजिक उपयोग की है, वह इस प्रकार है—

प्रथम सामाजिक का विवरण :

जोधपुर के राजकुमार प्राचीन विभाग प्रतिष्ठान के हस्ताक्षर
प्रथम में लेख को " व्यक्ति स्वरूप प्राप्तिक समय " आरतृ" नाटक नरसंह व्यक्ति
के महत्वस न " शीर्ष के हस्ताक्षर प्रति की नहीं है। उसमें ६०
पढ़ है। व्यक्तिवाद के ही आरतृ कवि बौद्ध कुशल ने इस मिला है। श्री
आरतृ की नाम ने इसका रचनाकार संयोज १८३३ माना है, जो व्यक्ति
की मुद्या के दो वर्षों के बाद का समय है। इसका आदि-आत्म द्रष्टव्य है।

" कपड़े देखना इतिहास " की प्रस्तावना
6 " राजस्थान में हिंदी के हस्ताक्षर प्रथम की खोज ", चुप्पी भाग, प्र०१२१०,
के सों अगरबट की नाहर्ला।
7 आदि: " अब वो पहाड़राज व्यक्ति स्वरूप प्राप्तिक समय कार्य कर गए। ॥ श्री
गणेशायन नाम। ॥
वृहा दौरान कविता देते हैं दिन प्रतिदिन कर देते।
कविता जन गाते करते हैं सुकर सुपर गुण सेव। ॥ ॥
— आगे देखिए
इस रचना के पदांक १३ और १६ की विख्यातता के अनुसार न से महाराज के जीवन की प्रस्तुत समस्तार पर प्रवर्तित फ्राइज़ पड़ता है। दोनों पद इस प्रकार हैं—

"कलित छन्दम : बरस इझाम मिल पूजन प्राथ में जन आम
पुरन आजु प्रमाणन फिरे तब मा के माये।
कुण कृपा लिङ भांति समस दामन हृदय जनन को दी दी—है।
प्रार्थना नृपार्थ फिर हुँ फिर फिरे प्रकाशन पूजन दी—है।
तप नय छोटे मुहम नहीं हिंसत ध्यान संदर्भत को धस्यो।
पातिक पालार शब्द पिंजरे कुंदन लैं उज्जवल करयो। कृ।।

पिडे पृष्ठ से चाल —

सकल मनोरथ सफल कर आसापुरा आप।
मुखदाई दस्यन श्रद्धा निरोक्त हो—हिंदू पाप। कृ।।
आई श्री आसापुरा राजत कवर राजिन।
तुम क्षयति कै देत हो। बहु दैवति मन का। कृ।।

अन्तः—यह समस्तेऽज्ञ तीर कौ चुने पहै चुपाया।
सकल मनोरथ चित्रित हुँ देश परम सुधा सत्यया। कृ।।
इति श्री महाराजः श्री १०० श्री श्री कुंडल कुड़ा तूरी कूस्त श्री महाराज लक्ष्यति स्वर्ण प्राप्ति सम्भ स्वरूपांनु। चित्रित हो श्री चान कुड़ा जी।
पूल दामनश्रव्य हो कै सांत पूल दामन दर्शिता प्राप्ति श्री मान कूजः कभी। सम्बूतु १०६५ नाव जाके १०२४ नाव प्रर्त्तमाने मनोरथ मासे प्राप्त माध्यम मासे नुक्ल पक्षे लुटिया तिया माय माप वाङ्के हृद महाराज लक्ष्यति जी ना मरसिया संपुर्णां मकल। कृ।।
पुनः यथा:

केलित ताराहि स्तनिः ऊपर सत्र बरसानि हुव
अधमासिः बुधि जारैनि घुप्पना तिथि पंचामि हुव
वार अर्तन बनाउ और नक्सर अमेला
जावः सुकरक्ष लोग राति घट घटि फलरेणा
तिथिः सत्र व्यायन चिर चित फियो देखन सारिहि कि हुरागः।
ताति पाप आप नृप लक्ष्मणि हुमन हिंदायः हुम सरागः।।16।।

दिवकीय साम्ब्रि का विवेचना:

पुनः(रहिः) के राजकीय हस्ताक्षरित संहिता से लेख को पुनः ऐसा हस्ताक्षरित पत्र देखने को मिला है, जो महाराज लक्ष्मणराय के तीसरे वर्ष में प्रकट होने के उपर्युक्त में तकदीरीन ज्योतिषीय दृष्टिकोण बनायी गई वर्ष-फल-पत्रिका है। यह पत्रिका अर्थ पत्राचार, चार्जः और से पत्री, अर्थात अवस्था में है जिस पर सृजकृत माना में लिखा गया है जिसकी यहाँ सम्पूर्ण प्रतिलिपि ही जा रही है।

" ।। अथ श्री मनुष्य विक्रमादितिय समास्तकं १२५५ वर्ष आर्थिकान
आजे १३४२ प्रकटित्ते सामायिक सम्बन्धमधिते श्री सूर्य जस्तूति सम्बांगवृत्तः
श्री आर्थिक माते जबल पद्ध ७ घटी १६-६३ वर्ष नवंग्री वर्ष तिथि शति वासरे।
उहराजाठा घटी १७ घट ३२ वर्ष में सुकमा घटी
६८४६ वार्षिकार्यां एवं पार्श्व मुद्धकोृत्ते श्री सुनायेदायन घटी
२६ घट १५ । २५ । २२ सम्बूँ श्री चिर्चिती कर्मवर्धिन गोविश्वर्मो
प्रतिपाद व्यूहानि राजकुल तिल्ल महाराजा बु श्री ७ लघुवरिय कैसी
वर्ष २० प्रेलेस: ।। "

निर्देशिका:

उत्तर दोनों निर्देशों के आधार पर महाराज के जीवनकाल एवं
जन्म-वय के सम्बन्ध में निम्नानुसार तथ्य सामने आते हैं:

1. संक्ति १९७६ बिंदु में ५० वर्ष पूरे होने के बाद जून्थे वर्ष में उनकी मृत्यु हुई। अतः सो १९६६ बिंदु उनका जन्म-वय होना चाहिए।

2. संक्ति १९३६ बिंदु में उन्होंने १९ वर्ष में प्रवेश किया अतः सो १९३६ बिंदु में वे १९ वर्ष पूरे कर चुके थे। इस दिशा में प्रमाण के आधार पर भी सो १९६६ बिंदु ही जन्म-वय सिद्ध होता है।

इस प्रकार इन प्रमाणों से अब यह निश्चय हो जाता है कि महाराज स्वप्नतिसिंह का जन्म-वय संक्ति १९६६ बिंदु अतः सन् १९१० ई० है। सो १९२५ बिंदु अतः सन् १९११ ई० में उनकी मृत्यु होने के तथ्य को निर्देश एवं स्थानीय सभी इतिहासकारों ने स्वीकृत किया है। इसलिए महाराज का जीवनकाल ९०-६१ वर्षों का सिद्ध होता है।

नामकार:

महाराज स्वप्नतिसिंह के जीवन के विषय में जानकारी देने वाले साधनों में प्रमुखता क्रम के इतिहासकारों हैं। इन प्रमाणों में प्राप्त: उनकी

(अ) गुजरात के प्रसिद्ध व्यापारिक, मान्यता श्री हरिहर प्राप्त मुल्तनी ने इस लेख की विशेषता को भ्रमण में रखने महाराज स्वप्नतिसिंह जी की उक्ति वर्ष-पत्र-पत्रिका के आधार पर लेख को यह रिख में है कि महाराज का जन्म २८ सितंबर, सन् २५२५ मौनधार प्राप्त: ९ जनवरी ९ वर्ष ६ दिन थी होना निश्चित होता है। लेख के पास उनका दिनांक २५-२५-२५ में तत्परता में है।

(आ) क्रम के वर्तमान राजकवि श्री श्रीवर्धन ईश्वरदास अयाची ही अनेक इस मत को पहले से ही माननेवाले थे। उन्हें इस पत्र-पत्रिका को अपने मत के साधन के रूप में लेख को दिलाकर इस मत के प्रतिपादन में उनकी सहभागिता का सम्मान के लिए लेख उनका आमने-सामने है।
राजकीय जीवन को ही मुख्यता दी गई है। सन् १७१० ई० में उनकी बीमा
वर्ष की अवस्था में होने वाले मुलाल आक्रमण के सन्दर्भ में प्रथम बार शुरुआत
लखपतिसिंह का उल्लेख इन प्राचीन ग्रंथों में मिलता है। इसके पूर्व के जीवन के जानकारी
क्षण के इतिहास प्राचीन सन्दर्भ से प्राप्त नहीं होतीं। क्षण दरअसल के आवश्यक
कवियों द्वारा लिखित काव्य-प्राचीन से महाराज लखपति के प्रारंभिक कविता
वर्ष के जीवन के विषय में जानकारी निम्नलिखित अभिव्यक्ति की नज़क़त की है,
परंतु रैल्के को उनके कोई सामान्य प्राप्त नहीं हो रही। क्षण के वर्तमान
राजकीय श्री सुमुहान जी अपनी नील के लेखक को अपनी वर्त-बीत में यह
प्राप्त करता कि महाराज श्री प्रारंभिक जीवन की जानकारी प्राप्त नहीं
होती। क्षण और साराजीय के लेख-साहित्य के प्रतिपादक मित्रानुसार यह
क्षण के लेखक कविता कलाकार के प्रमुख चरित्र रैल्के की दुनिया जी का
कारण ने भी रैल्के को एक पत्र में यह दिखा है कि महाराज लखपतिसिंह के बालक-
काल का कोई भी प्रमाण किसी को मालूम नहीं है। ऐसी स्थिति में
एक्स्ट्रा यही माना है कि महाराज लखपतिसिंह के बालक काल की प्रकटियाँ राज-
कीय घटनाओं की उस समय की एक विशिष्ट फूलमूल है। इस प्रथम ने चूके,
सन् १७१० ई० के प्रथम पाँच वर्षों में ही अपना सन् १७१२ ई० में लखपतिसिंह
के प्रभुतामह महाराज प्रामाण्य जी का देहांत हुआ । इस तत्परता के यह साराजीय
निश्चित करता है कि बालक लखपति के जीवन के प्रथम पाँच वर्ष क्षण के राज-
परिवार का अवलंब सुध समय होने वाली बायदे क्षण समय परिवार की
चार पीढ़ियों को एक साथ जीवित की गई। परिवार शल्क में परिवार के सब से
छोटे सदस्य होने के नाते बालक लखपतिसिंह का यह समय बड़े आंदोलन के बीता
होगा। इसलिए पालन के सन् १७१३ ई० का समय भी आंदोलन और सुझाव
पूर्वक पालन-पोषण का कहा जा सकता है, किन्तु सन् १७१५ अबादुल्ला बालक
लखपतिसिंह की नौ वर्ष की अवस्था के परिवार के पिता महाराज देसह जी

१. रैल्के के पास श्री दुनिया जी का दिनांक २-२७३५ का पत्र
'सुरक्षित' है।
के राज्यकाल के आरम्भ से ही कच्छ की राजकीय परिस्थिति बदलते लगी और इसके संस्करण। सन् १७२२ ई० और सन् १७३० ई० में अमृत सुजाता लखपतिसिंह की राज करने का ध्यान कच्छ पर दो-दो गुप्त आक्रमण हुए। सुजाता लखपति के पैले और जैन-कालिक के इस अवसर में सुदेशकलीन वालावरण रहा जिससे उनके कोपल मन को अनेक बार उत्साह, आँखों, देख और प्रजा प्रेम की भावनाओं से मर दिया होगा। कच्छ के दरबार में वारण किवारों को आश्रय देने की तथा उनके काब्ज़-पाठ से कायारम्य करने की जो प्रायः लखपतिसिंह के पूर्वकाल से ची आ रही थी उसने वास्तव में ईमानदार को साहित्य के संकार प्रदान किये होंगे। इस विषय पर विस्तारपूर्वक आगे रखा जाएगा।

इस तथ्य निश्चय से इस निश्चय पर पहुँचा जा सकता है कि बालक लखपत का वारणाधीन अर्थतः सुहद परिस्थितियों में व्यस्तत हुआ लेकिन कच्छ: उनकी बिश्रान्तरक्षणा और योगावलम्बा में परिस्थितियों विश्वास होती गई।

परिवारिक नीचन:

महाराभ लखपतिसिंह के माता-पिता तथा पुत्र का नामांकन उनके राज्याधिकार के कारण मनक कुशल ने इस प्रकार किया है—

"महाराज, माता-पिता से जान्मानु।
भारतेन लखपति को, चुल गोड़ साय सुझान ।१५।।
अबसदु उनकी माता का नाम महाराज तथा पिता का नाम देशसे जो तथा

१० कवि कनक कुशल कुल "लखपत महाराज नामपत्रा" की हस्तिलिखित प्रति,
छोट से ३२, प्रति बढ़ैड़, पाठ ने सहसन इसके हस्त लिखित प्रथ संग्रहों में उपलब्ध है।
११ (अ) "बनींवे गोड़सीमर", आज२ ५, पृ० ३४६।
(आ) "कच्छु संस्कृति दर्जन", पृ० ५७।
पुत्र का नाम गाँड़िया था। उनके नौ राणियों में निम्नलिखित महारानी
राजकुमारी ने सुकताज गाँड़िया को जन्म दिया था जो उनके पारमपर राज्याधिकारी
बने। 13 महाराण लालपत्रिविद ने छोटी भाई का नाम गाँड़िया नाबनी था। 14
उनकी एक बड़ी बहन का बिना है स्त्री तत्कालीन बड़ी राणा रक्षका पुत्र
ब्रह्मचारी राणा (सन १७११-१७६८) से होने का इतिहासिक प्रमाण प्राप्त
होता है। 18 इसके अतिरिक्त अनेक रूप, रिपोर्ट्स से हुए अन्तर्गत पुत्र
मानसिंह, स्वामी, संग्रह क्षितिज, मेलवाणी, जाणा जी, नाम निम्न नाम
संग्रह है जिनमें से मानसिंह को ये अत्यधिक बहादुर थे। 19 इस यह देख
पुत्र मानसिंह के जीवन का आरोप सुबद्ध पारिवारिक वातावरण में
होने की संपूर्ण स्मृति दृष्टिकोण होती है। 20 ये: परिवारिक बहादुर के पारिवारिक
जीवन का चित्र यहाँ प्रस्तुत किया जा रहा है—

इतिहासश्रृंखला में दिये गये कुछ प्रस्तुतियों के आधार पर कहा जा

12 (अ) "सिलेस्तन्स प्रोफेसर दी रिकार्ड ओपेन दी ब्रेसभ कर्निये" न्यू
साइंस सिविलिजेशन में सूची म "सिलेस्तन्स इन्फूव्हल रित्रे" द बाकी ",
पृ० २७४
(आ) "कक्ष देशन हिंदू इतिहास", पृ० १ से ८, को आल्फाराम के दिनिपोटी
12 "गुंशरी" साप्ताहिक, ६ नवम्बर, १९३६ पृ० २५-२६ के राव
साहित्य महाकाल दल्लारम साहस।
14 (अ) रिहार्टिक्स सिलेस्तन्स प्रोफेसर दी रिकार्ड, बोजट,
१९३६, साहित्य १६२-१६२, पृ० २१५(२१५, २१६, २१७, २१८)
(आ) "दी ब्रेस्थ हिंदू", पृ० २६२
1५ (अ) कही, पृ० १४२ तथा १४५
(आ) "कक्ष देशन हिंदू इतिहास", पृ० २०६
सक्ता है कि युवराज व्यपाईतिसिंह और राजमाता महाकुंदर के बीच अस्वस्त रोगिनी थी। यह राहुल देश आये हैं कि सन् 1710 ई 30 में जब कच्च पर मंकर मुख आक्रमण हुआ तथा राजमाता ने अपने पुत्र व्यापत को आक्रमण के लिए प्रत्यक्ष-प्रतिबंध करते हुए वह प्रतिवाद की थी कि श्री द्वारिणीकृष्ण के श्री वर्णिनी में विकसी पुत्र का उपार धर्म किया जाएगा। 16 सन् 1714 ई 30 में वे द्वारिका की मात्रा को गई थी। कहाँ के पुजारियों से अस्वस्थ होकर वे लौट आईं थीं। उन्होंने कच्च में ही द्वारिका के तकर पर मादिर बनाते हि निर्मित स्थापत्य अवश्य को हर दिन माँड़ती थी। कहाँ के प्रत्येक मादिर के विशेषेष में उन्होंने अपने प्रिय पुत्र युवराज व्यपाईतिसिंह का नाम बुझाया था। 17 व्यपाईतिसिंह को भी अपनी माता के प्रति आदरभाव था। कदाचित् इसीलिए वे राजस्थान के लोकप्रिय दीक्षार्थ देनकर और राजमाता के बीच व्रजस्थापक संबंधों की आता को लेकर दीवान के विरन्दुख हो गए थे। 18

राजमाता महाकुंदर की भोजना अपने पिता महाराज देशज जी के साथ युवराज व्यापत के संबंध अलग नहीं रहे बल्कि क्रमशः विकसित हो गये। इस प्रकार की रचनात्मक और आर्थिक परिस्थितियाँ निकल प्रकार आरणीपूर्वत रहीं इसकी चर्चा प्रसाद अभाव में की जा पकड़ी हुई। फिर उन्हें व्यापक भी लाभ हो जाते हुए उन्होंने देस जी को फिर भी प्रकार की अपनी नाना नहीं दी। इतना ही नहीं उनकी आर्थिक व्रत्ति का संतुलन करने के लिए व्यपाईतिसिंह ने सन् 1749 ई 30 में -

16 "कच्च दर्जन" श्रीकृष्ण लेख, "पुजराज दर्जन", पृ 413 देख मानुकुलराम भेंटा।
17 (अ) "बम्बई गोपेत्य"
18 "दी जोड़ख दिलस", पृ 413
"तिलग यें " की स्थापना करवायी 33 निका विसूत उत्सेख धार्मिक परिसंपर्कों की चर्चा के अंतर्गत किया गया है। सन् 1955 में पिता देशल नी की मृत्यु हुई। पिता के साथ महाराज लखपतिसिंह के सम्बन्धों के उपविष्टक विवरण के आधार पर दो महत्त्वपूर्ण कथा प्रकाश में आयें : एक पिता और पुत्र की मूल श्रृंखला में इतर दोनों में आत्मार्थ समाज की स्थापित न कर सका, यथार्थ लखपतिसिंह आपने पिता देशल नी के प्रति सम्मान मात्र रखते थे। और दूसरी और देशल नी पुत्र अभी वैत्तिक प्रतिकृति को व्यापार में सकर उनकी स्वच्छृदंदुत्त को एक लीभा तक बढ़ाने रहे हैं। दूसरे, उपविष्टक विवरण से लखपतिसिंह का वह एक सम्मान श्रमित्व का प्रतीक में आया है जिसके कारण अपनी मान्यता और स्वाभाविक जीवन में फिर फिर आया का समाप्ति पिता से भी करने को ले खेतार नहीं थे।

जैसा कि पहचान देख आये हैं लखपतिसिंह के नै रानियों थी जिनमें से महाराजी राजकुमार ने युवराज कुंवर गोड़ को जन्म दिया था। सन् 1751 ई. में महाराज लखपतिसिंह की मृत्यु के पश्चात् राज्याधिकारी बनने के समय गोड़ नी की अवस्था 36 वर्षों की होने का उत्सेख मिलता है। 18 इसमें यह अनुमान खिलौ जा सकता है कि युवराज गोड़ के जन्म-वर्ष सन् 1751 ई. के पूर्ब लखपतिसिंह का विवाह महारानी राजकुमार से सम्पन्न हुआ होगा। उनके दास्यमल्य-जीवन के विवाह में दिलेश उत्सेख प्राप्त नहीं होते। दैनिक सन् 1752 ई. में पश्चात् अभी उनके दास्यमल्य-जीवन के लागत 14-16 वर्षों के उपरान्त आपने पति से अवलंब हो पुत्र युवराज गोड़ के नैम तब दु:ख को महारानी के को जाने का पूर्णितिकाल साशील प्रकाश मिलता था।

18 (a) दास्यमल्य, मुनज (कुल) से प्राप्त "तिलग यें " की वर्णित प्राप्तियों को "प्राप्त प्रिय हिस्से" के पास पुरस्कृत है।

(आ) "कुलमुनज संहारित दर्शन " , पृ. 202-204

34 "दी खेक हिस्से", पृ. 156
है। ३५ महारानी के इस अवस्था का कारण था महाराज का राजनय नाच-गाने में तलवार से युकार गौड़ के राजविख्यात छिन जाने का भय। ३६ उपर्युक्त कारणों से ही महाराज लक्ष्मणसिंह और युकार गौड़ के बीच भी घनू १५९२ ई० के पश्चात् संघर्ष चिपकाते गये। युकार अपनी पत्नी के साथ नगर मुंहा ही में रहने लगे। नगर मुंहा के व्यापारियों के प्रति दुर्भवहार करने से रोके गये नगर के कारण मनु १५९० ई० में युकार दूरे गौड़ अपने पिता से मुद्दा करने के लिये पौरोष्क के राजन से ख्यात की माँग करते थे। ३७ औरत सम्म तक पिता-पुत्र में असल के नहीं देखा, यहाँ तक कि अधिकारी होते हुए भी युकार गौड़ को राज्य का अधिकार देने के लिये महाराज लक्ष्मणसिंह ने निर्देश किया था और वे बाहर थे कि अपने अभ्युदय पुत्र मानसिंह को यह अधिकार प्राप्त हो। ३८

पारिवारिक और सामाजिक संबंधों की हद देखते ही महाराज लक्ष्मणसिंह की मृत्यु के पश्चात् की एक घटना यहाँ उल्लेखनीय है। महाराज की चिंता पर चक्कर उनके राजन स्वतंत्र रहने चाहते थे और यह जद्दी ३५ पहलु एक घड़कड़ थी।

३५ "कम्बले गलोंएयर\"", पृ २६
३६ "दी औले हिल्स\"", पृ ४३
३७ "कठंगाम बुठठ इतिहास\", पृ १०५
३८ "दी औले हिल्स\", पृ ४३

३९ "सावित्री सत्कुछ सलाह राजा चूँमा अग्नि जी की लसे वारी की करे हस्तो काढ़े धरणे।"
(अन्तः: सोश्व स्त्री और सक्रिय राजा िचा पर चढ़े, लाख वार कर कठ िचा तारिक बच बता।)

७१ "कठ िलधर" दिवसीय छंद (१५२६) पृ ६३५ के दुलेयार कारणों
केसिक को जो प्राणान्त उपकर्ष दुःख है उनके आधार पर सत्कुछ की सीखा सोश्व न होकर पढ़ देंगे है, जिसका अध्यास्थान उठवे रखा पाया है।
भी रानी महाराज के पीछे सती नहीं हुई। ३० रानियाँ एवं सैली के प्रति महाराज के सम्बन्धों के प्रकारित करने के दृष्टिकोण से यह घटना प्रायः महत्त्वपूर्ण हुई। महाराज लखपतिसिंह के जीवन के अंतिम वर्ष पारिवारिक जीवन की दृष्टि से उपरिनिर्देश त्यों का सम्बन्ध करते हैं। श्री समुद्रान रामचंद्र के रूप में उनकी रोचक अवधि में महाराज के पास परिचारक से देकर निर्देश परिवर्तन में से कोई भी उनकी देशमात्र के रिश्ते उपरिपत नहीं था।

अतः उपरोक्त विवेचन के आधार पर कहा जा सकता है कि प्रस्तुत शौच-प्रथम के विवेचन महाराज लखपतिसिंह का पारिवारिक जीवन कुल मिलकर मुक्त और प्लेश-संकर नहीं माना जा सकता। उनके वाद-काल में केवल वात्सल्य के प्रारम्भिक वर्षों के उनके प्रमितम, पितामह, और राजभाषा महाकेश्वर के आलस्य के कारण अत्यंत एक प्रकार का मुक्त राजनैतिक वातावरण बना रहा लेकिन बाद में फिर कह गया। वास्तव में महाराज का अपना स्वभाव और व्यक्तित्व उनके पिता, पत्नी और पुत्र के बीच सोमस्थ पूर्ण सम्बन्धों में बाकी बना रहा। इस पारिवारिक मनोरमित्व ने एक संघर्षक राजनैतिक परिस्थितियों को भी प्रभावित किया जो गोड़ उन के संघर्ष की पूर्वी निर्दिष्ट घटना से स्पष्ट है। परंतु उनके सारिहित्यिक जीवन के एक प्रकार से इस पारिवारिक वातावरण से आभावित ही कहा जा सकता है।

राजकीय जीवन:

अतः प्रतिवारिक अनुभूति के अंतिम यह दृष्टिकोण किया गया है कि युवराज लखपतिसिंह ने अपने पिता महाराज देश जी की नीतिका-वस्त्र में ही सन १९४१ ई० में राजनैतिक प्रदर्शन कर दिया था। परंतु इसके पूर्व भी उन्होंने महत्त्वपूर्ण राजकीय प्रसंगों में सक्रिय सहभाग देखा।

३० "दी भैले हिसस्", पृ० १४६
लोकप्रियता और महत्व अद्वितिय कर लिखा था। इन प्रसंगों का सौंपत्तिक
विवरण इस प्रकार हैः

(१) सन १३१० ई ० के मुगल आक्रमण के समय युवराज ने उच्च राजकीय
मंचनाओं में माँग लिखा था। ३१

(२) उन्होंने के वीरतापूर्व साहस के कारण उस मुगल आक्रमण में
कच्छ-राज्य निकटी बना था। परिणामस्वरूप वे एक बीर
यदृश्य एवं कुल सैन्य-संयुक्त के रूप में प्रसिद्ध हो गये थे। ३२

(३) युद्धघराज्य में किसी न किसी उठेक्की को लेकर महाराज देसह ने युवराज को दिल्ली के मुगल दरबार में कच्छ-राज्य का
प्रतिनिधि बनाकर गृहीत किया था जिसके अंत महत्वपूर्ण रिचर्ड
इस लेस ने मुन के "आईना-महल" में देखे हैं। अपने ऐसे ही
राजकीय अभियान से सफलतापूर्वक छोटा आने की फिक्षुदनती
देखकर को कच्छ के केंद्रस्थान राजकीय रूप से मूलदान अपनी ने सुनायी
थी, कह इस प्रकार हैः

महाराज देसह नी के आदेशस्वरुप एक बार युवराज कैसर
व्यवस्थितकों दिल्ली पोसे थे। वे उनके राज्य के प्रतिनिधिरूप में दिल्ली
के सासक के पास मेकर राज्य की निर्मितित के प्रति उनका ध्यान सीरीमा
वाहते थे जिसीए एक भो मुगल शासक कच्छ के पर्याप्तक राज र कर पुरत्त को
अद्वितिय कर दे और दूसरा युवराज अपनी प्रतिनिधित्व से अपने को रोके।
दिल्ली दरबार में मुगल शासक को युवराज ने बड़ा विचित्र नज़राना प्रेष
किया जिसमें कच्छ की धरती से पैदा होते बड़े विचित्र धाराओं के नूतने थे।

उदाहरणार्थ

३२: "कच्छों का भूकम्प इतिहास", पृ १००, डॉ जयरामदास नव गाँधी

३२ (अ) "वास्तव गहरायाँ", वा ५, पृ १४१ डॉ जेम्स केम्पकोल।

(आ) "दो अंक: हिस्सा", पृ १२४
नजराएं में हीरा ज्वाहिरात को नसर-अंदाज़ करने की हरकत को बादशाह अपना अपना समय बौछार उठा। युवराज खसपत्तू ने इस बाहाने अपने राज्य की आर्थिक स्थिति की वास्तविकता को हमदर्द करने यह कहा कि वे मुख-सर्वश्रेष्ठ की दौरचुप बाहर हैं, जो माँ-धरती के ऐसे घान से ही संभव है और यह भी कि क्षमा के पास हीरा-ज्वाहिरात की क्या कमी हो मूँगी सकती है। बादशाह इस उत्तर के साथ हुए और मच्छ की राजकुमार को बेदखल कर दिया। परंतु मुश्क दरबार में घटित इस घटना का विषय प्रभाव कहाँ की दौरान गारिकाओं पर पड़ा। रात के समय वे निकान राज्य के प्रतिनिधि खपतिसिंह के निवास स्थान पर न जाकर पड़ोस के जन्म राज्य के ठहराव में अपना करने गई। संगीत प्रेमी खपतिसिंह को अह अलग गया। उन्होंने ऊँचा युद्ध सीधी। अपने नौकरों को यह आदेश दे दिया कि किसी भी व्यक्ति को बिना इजाजत के बाहर दाँविल न किया जाय और उन्होंने एक पैर में शैली बाँध कर, दूसरे पैर में मुदंग दलाकर लालकुंज की गाति के साथ गायन भार लेने का दिया। आम्मा दिल्ली के घरवाले ने निम्न प्रकार की गायकी की सवी हुई लांब-शाली तथा लाल-अंगूठी के रंग उस निर्भेक खारफ के निवासस्थल से सुनाई देने पर गारिकाओं को भाँड़बंद एवं निभाया हुई। खसपत्तू के दरबार पर वे खड़ी हुई। करोड़ आंचल खड़ी गया। युवराज ने अपना स्वयं साज-साखान फिरा दिया और बन कर बैठा गया। दांविल होते ही उन गारिकाओं ने वे तो महफिल देखी न की, न बाधय, न तालाबै। पूछते पर युवराज ने व्यंग निश्चय कि इस निर्भेक मुख-सर्वराष के यहाँ मछली बांध गायन को करते आयेंगा। उन गारिकाओं को खिलाया जैसे भावा? दांव-बाँध पूछते पर खसपत्तू ने ऐसे मुख-पृथ्वी कूट करते के ढङ वे यह कहा कि वे स्वयं हीरा गायों बजाते और मच्छ करते थे। गारिकाओं को लगा कि राजा उनकी हैसी उठा रहा है। उन्होंने भी तपाक से कह दिया कि वे ऐसा अभी कर
दिला दूःखी तरे दोनों आनन्दवन उनकी गुजार वन कर रहहिं। फिर क्या था, युवराज लखपतिसिंह ने प्रमुखसुर गुजारफल जिस्वा भिक्षा और अपनी कह्ना का करिसुरा दिलाया। कब्ज में यह विक्रेदस्ती कब भी प्रसिद्ध है कि ये दोनों गारिकाएँ जो हैं अनुतार युवराज के साथ कब्ज में आकर आनन्दवन रह्ये। इतना ही नहीं, महाराज लखपतिसिंह की चिल्ला पर चुक्कर जल मस्ते बाली सोन्त्य यहाँ में ये दो गारिकाएँ भी थीं।

इस विक्रेदस्ती से इतना अच्छा पत्ता होता है कि युवराज काल में ही अपनी विश्वम्बर राजकीय एवं बलामूल प्रवृत्तियाँ की सफलता के रूपे लखपतिसिंह लोकप्रसिद्ध ग्राम्य कर चुके थे।

यह विचारणार्थ है कि अपने पिता की जीवितावस्था में ही लखपतिसिंह के राजवासिकार प्रभाव की आवश्यकता कब्ज पड़ी? पहले यह लक्ष्य किया ना कुछ है कि पिता और पुत्र के समान्य आर्थिक समस्या को दूर रखने का यह लक्ष्य है। युवराज की आर्थिक आवश्यकताओं का कारण उनकी विविध व्यक्तियों की प्रवृत्तियों की। वे अपने आश्रय में श्राव, विवाह, उघोग, साहित्य, जो आदि होते वे विशेषकार के ही लोक परिवार और प्रतिसाधित करते थे और जिस पर विभेद काल अन्य की गई है। युवराज लखपतिसिंह विश्वम्बर स्तम्भ एवं दृष्टिस्पर्श व्यक्ति वे और अपने समय में वे आपराधिक ही स्थान के इस्तेमाल आदिवासित न थे। उनमें उनकी व्यक्ति वर्ग जनस्तम्भ के साथ-साथ प्रजा स्वामार्थक भी था।

18 (अ) "कमी प्येटियर", वृ.५, पृ.१.२३ ।

18 (ब) "कमी प्येटियर", वृ.५, पृ.१.२३
में, ढैंक के मत में कुलाच लघुपतिसिंह को अपने पिता की जीवित अवस्था में ही राज्याधिकार अपने हस्ताक्षर करने का कारण उनका यह व्यक्ति-वैकल्पिक ही था जो अपनी सीमाओं को लोकारण अनेक नदी एवं उद्देश्यगमित प्रबुद्धियों को सम्पन्न करने की महत्त्वकर्षण रखता था।

महाराज लघुपतिसिंह का राज्यकाल:

महाराज लघुपतिसिंह की संता एक प्रकार से तो सन् १५३१ ई० से ही प्रारम्भ हो गई थी, परंतु उनका विविधत राज्याधिकार महाराज देसल जी की मृत्यु के पश्चात् अर्थात सन् १५५६ विजयवर्ष ज्येष्ठ शुक्ल एकदशी को ही सम्पन्न हुआ। कच्च के स्थानीय इतिहासकारों का ख्यात चारण कबीर ने उनके राज्यकाल का आरंभ इत्यादि राज्याधिकारिक विषय के पश्चात् माना है। ३४ इसलिए महाराज लघुपतिसिंह के राज्यकाल की अवधि का निर्णय करना आवश्यक प्रारंभ होता है। कच्च के स्थानीय इतिहासकारों एवं चारणारों ने अपने मत को राज्याधिकार का परिप्रेक्ष्य, शैल और आपूर्वारिक विषय के स्पष्ट महत्व के आधार पर रिक्ष्य किया है, वस्तुतः राजकीय प्रभु-प्रतिष्ठाओं के आधार पर नहीं। वास्तव में, सन् १५३१ ई० से केवल सन् १५५२ ई० तक के अनौपचारिक राज्यकाल में पिने जाने वाले दस-रंगीर हरर ही राजकीय दृष्टि से महाराज लघुपतिसिंह के अत्यंत महत्त्वपूर्ण वर्ष होंगे।

अंक (३) कच्च के कर्तमान राजकीय श्री अं० मुखर्जी से हे स्वर्दान अयाची का आह दोहा प्रसिद्ध है:

"संभल अब आठ पर जमालग पुस्त काज
झूठी विदिष एकदशि, अब चित्त अर राज।" 

(आ) कच्च की राजधानी मुंज के बाजार में चाचहुँ पुलिस बॉक्सी के पार
कुदा हुआ लाञ्चावृत्त भी इसका दासन है। लाञ्चावृत्त की प्रति-रिली अन्य अन्य प्रसिद्ध की गई है।
इस समय उन्होंने व्यापक, लोकहित की विचित्र प्रूढ़ियाँ को पस्तवावत किया जिसमें पुरुष उन्होंने अपने युवराजकाल में ही कर दिया था । इसके अतिरिक्त यह भी विचारणीय है कि राज्याधिकार व्यवस्था के नाग स्तर महाराज की शैली में था और इसी समय उन्होंने किसी नयी विचार-लक्ष्यी राजनीतिक प्रूढ़ि का प्रारंभ ही नहीं किया था, विशेष अपने राजकीय साहसों के प्रति निरक्षेप भी रहे थे । 35 इस कारण के अति स्तर दो वर्षों तक के स्तर बनी थी और अत्यधिक राजोख्त भी थे । 36 इसलिए शुद्ध बालकता दृष्टि से देखा जाय तो महाराज व्यवस्था के राजनीति के अन्तर्गत समस्त 1791 ई० से सन 1793 ई० तक के समय का अवधि रिक्त थी। यही दृष्टि हात देखकर समय प्रमुख होने के कारण उत्तर 1791 ई० से सन 1793 ई० तक के बीच बच्चों को उनका वास्तविक राजनीति माना है । इस प्रकार क़द़क़ के बालक-शासन की परंपरा में प्रभृति शैल-प्रूढ़ि के विलेख महारानी उच्चप्रूढ़ि के उपर राजनीतियांवधि को पिनाते हुए यही उनकी प्रमुख राजकीय प्रूढ़ियाँ का परिचय दिया जा रहा है।

यह देखा जा सकता है कि मुखराजकाल से ही महाराज व्यवस्था की राजनीतिक प्रूढ़ियाँ का सूचिपत्र हो जुका था । राजमायता के साथ देखकर उनकी अनुचित व्यवस्थाओं की झड़ी से व्यवस्था उसके प्रति रहने पर कही दौर-बाद रहते थे । दैनिक वही देखकर महाराज देखने का विशेषतम माना था, इसलिए राज्यविधि की प्राप्ति में उसके व्यक्तिभाव दौरे का नियम देखकर सन 1791 ई० में उन्होंने उसकी हत्या करवा दाली । 37

(3) "बनकिया गोरियर", वां ५, पृ १४२।
(4) "दी व्लेक हित्स", पृ १९५ और १४७।
(5) "सी ओर्ट लेकर जॉन्न दी हिष्ट्री अपूर्ण क़द़क़", पृ १०९, यू. - 'बिन्से ओल्टर'।
(6) "दी व्लेक हित्स", पृ १३४।
(7) विदेशी इंध्याकालों में दीवान देखकर की हत्या का समय सन् — आगे देखिए —
तत्परता की वर्तमान स्थिति में उन्होंने अपने पिता की कृपा कर दिया था, यह हम देख आये हैं। राज्याधिकार पार्श्व हर उन्होंने अपने पिता के अन्य विश्वसनीय अधिकारियों, दरबारियों तथा उनके व्यक्तिगत परिचारिकों को कुछ के दूर दूर के प्रदेशों में भेज दिया। १५ राज्याधिकार में ही उनके पिता द्वारा संचित एक बहुत रायपत्र की घनराशि का उनका व्यक्तिगत कोष भारतीय लघुपतिसिंह को प्राप्त हो गया था, जो अपने विरोधियों को शान्त करने में उनके काम काम आया होगा। १६ अपने नये इतिहास रायनिःशा माध्यम चित्रित किये पृष्ठ से चालू—

१७२८ ई० माना गया है। कैसी पर्वत स्थानीय किशोरों ने लगभग १४२६ ई०, जो लेखक को प्राप्त हुए महसूलीय प्रमाणों के आधार पर यही ठहरता है। प्रमाणित इस प्रकार है:

(१) युवराज लघुपतिसिंह के ही आभासित कविता कन्ह तुलसी ने लगभग १५२६ अष्टादश ई० में रचित अपनी रचना में दीवान देशकर की प्रस्ता करते हुए रखा है:

" धनि उमयति नाकर धक्का, देशकर दीवान।
जाँच निर्माण अपने सुखं जानना सकल निधों। १५।। "
(कन्ह तुलसी विचित्र " लघुपति मंगली नाममाणा " हस्ताक्षरित प्रति बड़ी विद्वान नीरी सना विभाग में उपलब्ध है।
(२) नारायण महरेले पर वे मंदिर के शिलालेख में उसकी समाप्ति १५२६ हिंदू में दीवान देशकर की उपस्थिति में होती का उल्लेख है।
शिलालेख के लिए उल्लेख " बम्बई मोटिव " वो० ५, पृ० २५६-२५७
१८ " दी ब्लैक हिल्स ", पृ० ११६
१९ (आ) " बम्बई मोटिव ", वो० ५, पृ० १४१
(आ) " दी ब्लैक हिल्स ", पृ० ११६
द्वारा प्रस्थापित कार्यवाही से उत्पन्न हुई तौरपर और बेदनो का उपयोग करके उन्होंने तेरामद के ठाकौर सुमारा के विरोध को भी शान्ति का दिया।

इस प्रकार महाराज अपने सशक्ति ने अपनी सत्ता को निर्यातित करने के समय प्रयत्न किये थे।

महाराज अपने सशक्ति की राजकीय प्रतिस्पर्धा को नब्बे प्रमुख विशेषता प्राप्तिशीलता की थी। उनकी प्रत्येक प्रवृत्ति में प्राप्तिशील दृष्टिकोण के प्रवर्तन होते हैं जिसके प्रभुत उदाहरण यहाँ दिये जा रहे हैं।

1. उन्होंने कछ के महाराज और राजेन्द्र के स्वशास्त्र और धार्मिक माहात्म में अंतर स्थापित करने के लिए, अपने राज्य में फ्लेक्स दर्शाव के आयोजन की प्रथा को प्रारम्भ किया जो फिर फिर नहीं थी।

2. उन्होंने ही संशोधन संप्रति के स्वायत्त की प्रथा प्रारम्भ की जो फिर फिर राजनीति का स्वीकृत नियम बन गया।

3. राज्य की सुरक्षा के लिए जिस प्रकार की मुद्दा सामूहिक का पहले अभाव था, उन्होंने उसका निर्माण प्रारम्भ कर दिया था। सन 1941 ई. में अपने विरोधी तेरामद के ठाकौर सुमारा को शान्ति करने के लिए इसका उपयोग किया था।

4. अन्य दो सर्वप्रथम के धार्मिक साधनों के अभाव के उप

5. "गुरूराजी" साप्ताहिक, 8 नवम्बर, 1926, पृष्ठ 23-26, देशे राजा साहब महानाले दृष्टिकोण कुल्ला उपकार की।

6. "शॉर्ट स्केच ऑफ़ दी हिस्ट्री ऑफ़ कच्छ", पृष्ठ 109 भारती स्टाफ़
सिंह ने अपने प्रमुखताओं द्वारा कार्य का ज्ञात उदाहरण प्रस्तुत किया था। १८५ रजनीकान्त विद्यापूर्व के अनुसार सौराष्ट्र, काठियावाद के छात्र-वर्द्धी शासक जिनके महत्त्व का मूल्यांकन नढ़ा वर्द्धी वे उन्हीं ही लोगों और निवासी इंसानों द्वारा रामस्वामी माल्य की आयुष्यार्द्ध को प्रशंसा कर उन्हें राज्यव्यवस्था देने वाले महाराज लघुप्रतिष्ठित अपने सम्प्रदाय के प्रमुखताओं तथा स्वतंत्र निवारक शासक सिद्ध होते हैं। १८६

उन्होंने

(५) अपरिपक्व आश्रीमक यौनाओं के अन्तर्गत समगीत, चित्र आदि विद्वानों तथा साहित्य के होसों के विशेषांकों को आर्योपनित करने उनकी शिक्षा का भी समस्तित प्रभाव किया था। १८७

उत्तराद्वार

१८. "श्रम, स्वास्थ और धृत द्वितीय अंक", ३० जून,
१८. वही, दूर ३२०-३१९
१६ (अ) "अव लघुपति आवृत लौक उद्दित भेजन सुरमन ।
बेयों शुरु किये प्रीत कर वाय अवि दुहुन ॥१८१।।
म्मारम्म आयो इसन । सुख फसकरावं सिंह ।
सपायो राज मुनिबिन । सैनीया तरोबिन ॥१८२।।
त्यो नाथेय नाथीम ने । सात लाख लगे सीम ।
किंतु नाथों प्रति वरण । तेह हीत तारीम ॥१८३।।"

(५) कविर रहस्य " हस्तरिचित प्रथ, कविर शो प्रकाश निर्मित"

(अ) "सुधीनी तै रेखरथ परदा की रचि में दिखाये हैं।
देव के कुमारन ते ठहरे ए गली हस निकले
- आगे देशी
अतः स्पष्ट है कि प्रगतिशील राजकीय प्रृतितमं को महाराज लक्ष्मिनारायण के व्यक्तित्व से अपनाया था। वे इस्ते एक सजन एवं नीतिवक्तक थे। राज दरबार को अन्यत्र बरसने डंगे से सजाया जाता था। जिसमें अनेक निवृत्त आदर्शों को सादर निर्माण करके उन्होंने देश-विदेश के विवेक में अंतीकिर्ति जानकारी प्राप्त करने के लिये महाराज लक्ष्मिनारायण सदा तत्पर रहते थे। ८४ उन्होंने इन विदेशों से पूर्व-विद्वान संबंधी अपनी लीला निवासा को संबंधित करने के लिये ही नन्दे साधनों को प्राप्त किया था। ८५ राज्य अपने क्रमक्रय में कोई इतिहासक विविध पदार्थों का में सबूत था निम्नांक डंगे, प्रौंध और जीवन संगीत व्याख्याताओं घड़ियाँ, अद्वैत गोरूदार्ध, अनेक पुराने चित्र, कवियों के मलिनी निर्माण थे। ५०
नैसा कि पहले सप्ताह किया गया है महाराज अध्यक्ष का अत्यधिक प्रतिकृति राज्यकाल सन् १७४१ ई० से सन् १७५२ ई० तक का था।
सन् १७५२ ई० तक तो उन्होंने उन सभी व्यापक प्रबंधित की तमाम गुणधर्म रूप है दिया था।
अंतः कार्यशालाओं, वैभवशालाओं, संबंधित और विशेष नियंत्रण की कार्यालयों, निकटस्थ व्यवहार, निर्माण कार्य, देवस्तंबर की स्थापना,
आर्य-प्रभु संधि का निर्माण सन् १७५० ई० तक हो चुका था।
इन समस्त प्रबंधितों एवं राजकीय अभियानों के सी भारतीय सुनिश्चित स्तर
भारत का संबंध होता है कि वक्तव्य: महाराज अध्यक्ष का राज्यकाल लेना १७५१ ई० से ही भवस्थित रूप से अधिक न हो जाता है, और सन् १७५२
ई० तक पीता की नीतिविश्वसन का अपरिक्रेन वातावरण पर कोई विशेष
प्रश्न नहीं पड़ता।

सन् १७५२ ई० से महाराज अध्यक्ष के राजकीय जीवन का
दृश्य माहौल प्रारम्भ होता है। अपने बेटे का बिंदु महाराज देखक की की
पृथ्वी के पश्चात महाराज अध्यक्ष का राज्याधिकार सम्पन्न हुआ, जिस
लक्ष्य था उन्होंने अंत: उन्होंने राजधानी के बाहर की चाकू बनो
चौकी पर एक लामाज १७२१ जी गिने दुरारा यह घोषित किया गया कि
अब से प्रश्न समस्त की सुन-विद्याएँ की और अधिकारी की सुरक्षा की जायेगी।

## 5.1 लामाज की मूल प्रतिष्ठा इस प्रकार है:

" निस्तार,
श्री सिविल पद प्रसाद प्राप्तृदयः
महाराज दिवारा राजा श्री अध्यक्ष युद्धिका।"

" महाराज दिवारा राजा महाराजा श्री वक्तव्य श्री बनकाल्ल श्री मुन
नगर दी अंतराली पुनराओं माइड़वी श्री लक्ष्मण बंधर ती वक्तव्य बंधर
tथा जीर्ण बंधर ता बीजा परिणाम समस्त ना वैयारी ता सातारा
सोदारा ता रैल्फ बेली का समस्त जोगा जल प्रथम तमने दशकत्व घण्टी
— आने देखिए
पिछले पृष्ठ से चारू —

हटती ते राज श्री जी ते जसे देख मलाओ तारे अम तम उपर मेरेरानें भई जे बात ता ते तमारी कहावाणा हटती ते बात सवे ठाँरी ने चावा ने पो माँडी दीई है। हने ते केरार वणांत ता पोहारो दार मोक्षे मो करो कीई बात ता मो मुझारो करो मा। हने बार मुने तमारा नाय श्री जी ने श्री जी जी बार कृत हनी ते केरे चारो साकारी जे माँडी पण कोई हरखुड़ी होई मो मारी कहां जो कोई मारे पुनि पण आई तो पण देनु दर्शारा ना अशीन ने माणला ता अशीन मे केरारे ने चार माणस जीवी दर्शारा ने केरे तेम दर्शार करे के दर्शार ने मोक्षे कान पडे लारे कोई ज्ञानी केरारी पारे जोगीनु उठाने मारे तो हने पण चार अस्तीन माणस जीवी केरे ते केरु पडे लारे दर्शारा ना ठामरांजी प्रेमु वांली देंई अजन प्रेरण रैक्त ने कव-वोरी करो डंड करो हने नामी दोक्ढे। कोई पारे जीवी देखे नासे ते मारे सेशी बाते भाव आस माणस जीवी रवहार लुढ़े दरे कर जो आ लक्ष्य रणांच्या अस्तीन वाला ए होसे ते पारे लेने अस्तीन कोई है आसाठ जुंट। ए उक्त रूपे पवनांगिरी श्री गुरु हजार || श्री|| श्री।

महाराज मिस्त्र राजा
श्री ज्ञापित जी मुल कॉर श्री मौड़ जी (आ) तालमुख के हिंदी रूपान्तर

"कितना " श्री सरकार से प्राद प्रामुखद महाराज मिस्त्र राजा श्री ज्ञापित की नुप्रि प्रिया "

महाराज मिस्त्र राजा महाराजा श्री लक्ष्मण जी के वर्तमान श्री मुनिका तथा श्रीधर तथा माँडी तथा लक्ष्मण बेंद्र

— आपे देखिए
महाराज ने अपने राजकीय यस्ता का विस्तार भी किया था।
उन्होंने फलानी और बुधाला राजस्थान में राजकीय यस्ता का विस्तार किया था।
भीतर 1947 के अगस्त में उन्होंने बादशाह आलमगीर किस्ती की कच्छी घोड़े नहीं किया लेकिन बच्चा-राज्य द्वारा मचाया सपना को नाने के हाल को परम्परा से दी जानेवाली मुद्दाओं को बाद दिलाकर मुख्य सम्मान के साथ कच्छ राज्य के समस्तों
को मुझे कर दिया। 61 उन्होंने स्पष्ट हुई " माही महाराज " की
वहाँगत

पिछे पृष्ठ से बाद —

तथा काँट बैंडर तथा नकद बैंडर तथा दूसरे सभी पर्यावरण के व्यापारी तथा कानुना-संस्थागत तथा रैल्य प्रजा समस्त को यह घोषित किया जाता है कि पहले तुम शक्ति ( राजा तथा अंदलकारियों के करण )
अथवा कठिनाइया थीं। राजकीय जी ने कहा है हमें शासन-श्रेणी सृजा
है तथा हमें चाहिए लोगों पर नकदताला होकर जिन नालों की तुम्हें
विकसित थी उन सब के द्वारा के अछे दिन की चोरी के तामारथ उसके
कर दी है। अब तुम सब व्यापार-व्यक्तियों तथा उनके का रक्षण मुँह
मन से करो किसी भी वात का ढर न रखो।

अब किसी किसी दशक
के तुम्हें कोई सलामता नहीं और देन-देन की बातों में जो विस्तारित इस्तान्बुल नहीं करोगा। यदि किसी पर हम्मा आदि का
आरोप होगा तो भी दो निवास दरवार के दौर निवास व्यापारी —
वे चाहे व्यक्ति निकलकर दरवार से जो कहीं कहीं दरवार करेगा।
यदि कभी आपसीलगाड़ में दरवार को आत्मिकता पहुंची तो अपनी संतान
समस्त के व्यापारियों के लिए माँगा जाएगा उसे भी चाहे निवास
क्षमता के बहने के अनुसार ही खिला जाएगा जिसे बाद में राजकीय के
साथ-साथ द्वारा लॉकटो जाएगा। अभी के बाद दूरस्थान और सटपट
से किसी को कूद में एक बाइस भी किसी से नहीं की जाएगी। इसलिए सभी
बातों का विस्तार रखकर अपना का उपाय पूरे मन से करेगा।

— (अंग्रे ज्ञुषु फू रेक्सियर)

15. " घुरारार सन्-साल " पृ. १४६ के कवि नम्बर्ड रेक्सियर लाश्तैरकर
स्पष्टतः में के महाराज वाजपेयिसिंह के राजकीय यन्त्र के प्रतीक रूप में अभावित प्रतिवर्ती नाम पैलेंस की सजावट में विशेषता निकाला जाता है। विस्तार प्रमाण अभ्यास के चित्रण के अंतर्गत उल्लेख किया जा सकता है। दिल्ली के अहमदशाह बादशाह दुर्गा "सिंह" का लेख काँग्रे के बादशाह महम्मद-शाह दुर्गा "महाराज-राज गिलाण" का खिलाल मिलते है महाराज अरविन्दसिंह की "महाराज-राज गिलाण मिला महाराज श्री" का सम्पन्न प्राप्त हुआ था। १५ इस बार का भी प्रमाण फिलहाल है कि उन्होंने सन् 1799 ईं में सिंह के नगर ठूंठ पर आक्रमण करने की तैयारियाँ की थीं और अग्रिम के दुरालियों गांवकल्दा का क्षेत्र उपर्युक्त के राजकुमार राजा हुआ था। 

पर्वत उन्होंने दुरालियों लोक को इस कार्य को प्रष्टित करके बहुत बड़े राजनीतिक चिकित्सक का उद्योग काम किया। १६ इसके साथ साथ उनकी राजनीतिक अभियान का भी प्रमाण फिलहाल है। लिखित यह उस समय की बात है जब वे अपराधिक रोगग्रस्त हो गए थे। सन् 1760 ई। में कच्चा राज्य में पूर्ण अव्यवस्था पैदा गई थी। मुगल राज कुंकर मार्गों की प्रति राज्य होकर अपनी माता के साथ मुंडा में रहने लगे थे। राज्या-पितारी एकत्रित हो गये थे। परिपालन संबंधि निराकार और नए उपरकर उपनगरीय पिछले पुस्ते से चालाया -- (१५)

इस खेल का पाखन हमारे वोल्श, जो भी होगी, करने हमारा करना है। आपको हुज्ज ५, पुरानार १८०० वि। श्री हेमकुंकर के आया है।

हस्ताक्षर
महाराज फिलटा राजा श्री वाजपेयि नी
सुल फूंकर गोपाल जी

१२ "पिले दिल्ली" मनमोहिन बदलकर विद्वंत कच्छ, फारलिंस्ट दू भी। जा बिल्ली वाला एवं एक दी राजा। पृ० १६३, १६४

१४ "सुक्त नवसंग्रह", पृ० १६२ के समान लाखलकर

१५ "दि खेल हिंसा", पृ० १६४
की दो चौसिस क्षण-राज्य ने गैंवा दी । १६

क्षण के स्थानीय तथा कुछ दिनदेशी इतिहासकारों ने महाराज लखपतिसिंह के मामूली तथा अपने लिये सबसे की तीन अलोचना भी की है । १५ इसका कारण था महाराज लखपतिसिंह की महानायकता के अनुसार सुयोग्य विमलोत्तर का अभाव । १६ देखकर जैसे सुयोग्य १६ दीवान की हत्या करवाना उनकी राजनीतिक अदुरदृष्टि का परामर्शक है । वे अपने पिता की तुलना में इस दृष्टि से अनुकूल सिद्ध होते हैं । उनके राजपत्र कार्य में एक बार एक कोई दीवान बनाने चाहते थे । किशोर से उनके संतोष नहीं हुआ और न कोई उनकी समान सक्षा । यहाँ महाराज लखपतिसिंह के मन्दिर के निर्माण परिक्रमा की इतिहास-प्रसिद्ध धननायक का उल्लेख निक्षा जाता है ।

यह विचारार्थ है कि दीवान देखकर की हत्या करवाने पर भी उन्हें के पुत्र सुमित्र को महाराज लखपतिसिंह ने अपना प्रथम दीवान घोषित किया । इस कारण इस का महाराज लखपतिसिंह का राजकारण अविश्वास प्रवृत्तियों की ओर दोहन बना खरीदना था । किशोर पुनर्जीवित तथा उनके परम्परा दीवान महाराज की आर्थिक वास्तविकताओं की संपूर्णता पूर्ण न कर सके । पुत्र की प्रवृत्तियों को देखकर यह भी लक्ष की गई थी कि दीवान देखकर का यह पुत्र अपनी सौगति एकत्रित करने के लिए दीवान पद का तुर्पदमाओं भी करता था । ६० परिणाम-स्वयं, महाराज की आर्थिकता के अनुसार उनका क्षेत्र लोक कोई दंड निकाल

६६ " नम्बर ग्रेगोरियं " , वो ६, पृ १४२ तथा २६६

६७ " है १२ हिस्सा " , पृ १३४

६८ नहीं , पृ १४१

६९ " धनन लखपति जाके हक्क देखकर दोनों, जानकी हिमाल अगर गुरु जानक वहीं विस्तर " "

--- लखपति मनोरी नाम माता " कवि कक्कुश

६० "महाराज महाराज " पृ १४२
पथ । महाराज के रिपालियों के साथ संबंध करने में उनके साथ आदनी मारे थे। इत्यादि। उन्हें बढ़ा कर खिलाया गया। इसके पश्चात् सन् १७५६ हीते में उपरि शाह नामक व्यक्ति न्याय दीवान नियुक्त हुआ। वह मी सन् १७४९ हीते के समय की व्यंग्यकी योजनाओं जैसे "खिसरा मैडप" तथा क्रमानां राजसागर का स्थापना, देखा गया, आजया फहद आदि का निर्माण आदि के लिए प्रमुख धर्म गुठा न मलने के कारण सन् १७६० हीते में स्थापित किया गया। यह महाराज खयातिशील ने अपने प्रथम दीवान मुंद्रा दे सेठ को ही दीवान पद पर पुनः नियुक्त करके उसके अपनी रिपालियों का तथा योजणा सिद्ध करने का एक और मौका दिया। उसने उपरि शाह को बढ़ा कर उसके ग्रामनिवासों के साथ बूढ़ा व्यक्ति दिया। महाराज को अब मी पूजा देने से संबंध नहीं आया। उन्होंने सन् १७५२ हीते में दीवाना को हमेशा के लिए दूर कर गोचरीन मेहता नामक नये दीवान को नियुक्त किया। परंतु पूजा देने के अपने प्रतिनिधियों को महाराज खयातिशील की अज्ञा का खिसकार बनाते की एक जोड़ना बनायी। उसने महारानी राजकुमार और उपरि दुर्गेश गोड़ को महाराज के विश्वसनीय महकार अपने विश्वास में है रखा। दोनों, दीवाना के मार्गदर्शनुर्ख दुर्गा जाने के तैयार हुए। जिस पर दिन पूजा छोड़ने का निश्चय हुआ उसी दिन बाराबर दो-बीन चाँदों तक दीवाना देने के दीवान गोचरीन मेहता के स्थान में दूर जाने व योजणा की आज्ञा में रखा जा गया सुनाम संगठनों का साक्षर दिया गया। परिणामस्वरूप महारानी और उपरि दुर्गाया ते मुंद्रा नामक नये दीवान की अज्ञा में खिसकार बनाते का समन दिया गया। उसके स्थान पर उपरि शाह को फिर से दीवान बनाया गया। परंतु सन् १७६४-५ में कंच के प्रतिनिधियों द्वारा बाबु राजा बने हुए कुशीदास नामक राजकुमार के छोटे आने पर उसी दीवानपद के लिए फूट फिता किया गया। सन् १७६५ हीते में मुंद्रा के व्यापारियों के प्रति उपरि दुर्गा गोड़ के दूरार किये गये अनुच्छेद व्यक्ति के नामक दीवान महाराज खयातिशील ने मुंद्रा पर आधिकार लेते के लिए कुशीदास को जो कार्यमार सीमा था उसमें उनकी दिलाई देकर
उन्होंने किसी जीवन से नामक व्यक्ति को दीवान बना कर यह कार्य साधा।
महाराज लखपतिसिंह के राज्यकाल का यह अंतिम दीवान था।

उन्होंने किसी जीवन से नामक व्यक्ति को दीवान बना कर यह कार्य साधा।
महाराज लखपतिसिंह के राज्यकाल में सुशासन दीवान का अभाव क्षत्र रहा।
महाराज लखपतिसिंह कक्ष की सास्क परम्परा में अपने ढग के पूर्वांग शासक थे।
रात-दिन काम, कामगारों, नंदिकियाँ और गायिकाओं तथा रामबासा माध्यम
के बहुत लोगों की गौरवियता के कल्लेण और व्यापूर्ण रहनेवाला यह शासक
मुश्किल मौली के अभाव में भी कई न्यायाधिकार, व्यवस्थित शासन क्षत्र होगा
यह अन्य सिलसिले तरीक़े है।

स्थानीय तथा कुछ विदेशी इतिहासकारों ने
इसी को संदेह का रूप देते हुए उनके नामकात के पर अवधक्षा का भारतीय भी
न्याय लिया है।
परंतु महाराज लखपतिसिंह के राज्यकाल में कहीं अराजकता
फैला जाने का एक भी उदाहरण प्राप्त नहीं होता।
उनके राज्यकाल
में कोई बड़ा युद्ध नहीं हुआ।
राज्य में सार्वत्र का नामकात ही रहा।
राज्य में अराजकता का दुष्परिणाम दुनियादोर न होने का कुल्ह निरायक
था प्रभाव का राजमात्र।
वे वो किसी चर्चा की गई है अपने शासक के
प्रति कक्ष की अद्वितीय जनता की परिपूर्ण श्रद्धा।
महाराज लखपतिसिंह के राज्यकाल में भी थी।
उन्होंने की जनता अपने शासक को । "बाहा।" के संबंध
में दुसरी ओर स्वयं महाराज लखपतिसिंह ने अपनी प्रभा के छोटे
से छोटे व्यक्ति की भी न्याय देते का प्रयत्न किया था।

किसी गरीब

1५१ में एक्सायलिन, १५५

6२ (अ) "कक्ष दैसान इतिहास", पृ १५५
(ब) "कक्ष नो बुधु इतिहास", पृ १५६

6३ कक्ष में मुन, माध्यमतिता कहाँ के छोटे छोटे गाँवों के लोगों से लेकर को
अपने शासक के लिए यह संबंध अनेक बार युगे ने को मिला है।
फ़िलान की संपत्ति को हड़प्पा देने के कारण अम्मा के नामीदार के नाम पर उसी से मुख्यतः कह दिया था। 64 ले अपने राज्य के व्यापारी-व्यापारी वर्ण की दुःख-सुबिधा तथा सुरक्षा के प्रति ध्यान देते थे। 65 पूंजी खेत और अन्न-पैन नामक बांड़ी शासन जनार्दन के कहने में आकर युवराज खुड़के गाँव में उम्रा नगर के मध्य दरवाजे आगे युवराज खुड़के की मुख्य की तरह स्थानों पर लोक दर्शन करने के निमित्त आर पुर्ण राज्य के बड़े-बड़े व्यापारियों को नगर के दरवाज़े बेड़ बनाकर बेड बनाना और उनसे बहुत बड़े घर की मौज़ा की। यह जानकर महाराज ने बहुत बड़ी सेवा मेंकर युवराज खुड़के को दफ्तर में पाठिया। 66 अतएव संक्षेपः उपरिन्द्रिण्देत तथ्यों ने व्यवसाय के निरंतर परिवर्तनों के कीच्छि महाराज के प्रति प्रवास के विचार के भीतर अछे अनुभव करने एवं अभिन्नतार रखा।

इस प्रकार महाराज ख्यातिश्रीं के राजकीय जीवन का प्राचीन अवैधात्मिक प्रवृत्ति से दुःख था। प्राचीनीतिक दुःख के बेपत्न से अपने समय से आगे निकल जा थे। यहाँ यह विचारणीय है कि क्या उनका राजकीय जीवन उनकी साधकता, साझेदारियाँ एवं आदर्शों में अवरोधग था? यदि उनके राजकीय जीवन के तथ्यों का समुच्चय परीक्षण पिया जाय तो यह नियंत्रित निश्चय है कि महाराज ख्यातिश्रीं अपनी राजकीय सत्ता और प्रवृत्ति का उपयोग जीनुमुक्त, व्यापक, प्राचीनीतिक, साझेदारी, साझेदारियों के पौरव और विचार के दूर से ही करते थे।

उनके राजकीय जीवन का अंत सन् १७६० ईस्वी में अवरोध सं० १६०० के निकट जनसंख्या जीवन को हड़प्पा तथा उनके पश्चात उनके युवराज खुड़के गाँव में कहर के शासन हुए। महाराज ख्यातिश्रीं अपने जीवन के

64 " वर्तमान पूर्विक " , पृ० १४२
65 " दि व्हैफ रिस " , पृ० १४३
66 " कच्चीसे बूढ़ियों इतिहास " , पृ० १०४
सार्वजनिक जीवन :

महाराज लखपतिसिंह की विविध साहित्यिक प्रदूषितियाँ को ध्यान में रखते हुए उनके साहित्यिक जीवन को तीन प्रमुख मार्गों में रखा जा सकता है। उनके आचार्य लालोजी ने साहित्यिक जीवन को संस्कार-काल कहा जा सकता है जिसकी कोई निर्धारित समय-गणित निर्धारित नहीं है। इसकी अनुसूचीन का वर्तमान काल का 1474 से लेकर 1867 तक अवधि उनकी आठ वर्ष की अवधि है। लेकर इस्लामिय वर्ष की अवधि तक माना जा सकता है। संस्कार-काल के अंतर्गत उनकी साहित्यिक कृतियाँ को उन्होंने रक्षा करने का नामांक निर्माण नहीं कर सकते हैं। इसमें उनकी विविध क्षीण रूप साहित्यिक प्रदूषितियाँ का भी समालोचना हो जाता है।

संस्कार-काल : कच्चे के साहित्यिक वैश्विक और सीमाओं को बड़ा व्यक्ति करते हुए यह स्वभाविक होता है कि वहाँ का जर्यसारण लोकप्रिय संगीत-साहित्य महाराज लखपतिसिंह के साहित्यिक-संस्कारों का कारण बना होगा। तत्कालीन साहित्यिक परिस्थिति की चर्चा के अन्तर्गत यह दुर्लक्षित किया जा सकता है कि उस काल में कच्चे-साहित्य की परम्परा केंद्र में है। इस केंद्र संस्कृत-साहित्य से प्राप्त प्रभु, त्वरा, शाहस, मोहन और वेरास्थ की मायावर्गीय को उन्होंने सहज ही आत्मसात निर्माण किया निर्माण होगा। लेकिन कोर्ता व्यवस्थ की छाप आत्मक एक कच्चे प्रणाली प्राप्त हुआ है जिसके आधार पर यह कहा जा सकता है कि...

67 "दि ज्ञैक हिस्स", पप 186
क्षण-साहित्य से प्राप्त उन संस्कृत कवियों ने उनकी कविता प्रशंसा को जगाया था। 56 यह कदाचित् महाराज ख्यातिसिंह की आरंभिक रचना भी हो। 57

अंद्रमण-काल: भाईजी एक वंश के राजाशास्त्रित चारण दिवि के किसी परम्परागत पद पर इस समय हमीरदास रचना थे। जी ख्यातिसिंह के जन्म के पूर्व से ही महाराज देवसह जी के दरबार में थे। वे अपने विषय के चित्रण में भी भिड़े जाते थे जिनकी रचनाओं का उल्लेख किया जा जुगा है। " हमीर नाम माला " से १६१३ चित्र की रचना है जिसके द्वारा अठ-वर्षाय बालक ख्यातिसिंह के जन्मस्थानी भाषा की प्रशिक्षण दी जाती होती, ऐसा अनुमान किया जा सकता है। कविय हमीर-दास ने १६२६ चित्र में " पुणा दिवि अग्रक " और से १६३६ चित्र में " ख्याति पुणा रिपोर " की रचना की थी। " ख्याति पुणा रिपोर " में उन्होंने महाराज ख्यातिसिंह के रिपोर जान का विषय तर से वर्णित किया है। ५०

56 महाराज ख्यातिसिंह के द्वारा क्षण में रचित एक ग्रंथ को पुनः के एक महत्र ने सुनाया का विश्वसन उनके कृतित्व की चर्चा के अंतर्गत किया गया है।

57 यहाँ आरंभिक रचना कहने से यह लागत नहीं है कि यही उनकी प्रथम रचना थी, परंतु यह तो कि मात्रावधि होने से क्षणी में उनके काव्यरचना किया होगा। क्षणिने उनकी यह एकमात्र रचना प्राप्त होती है। अन्यथा नहीं है कि उनके अन्य रचनाओं भी क्षणी में ख्याति हों परंतु ये आज दुबारा नहीं। रचना केवल धारावही से उसके रचनाकल्प का पता लगाना असंभव है।

58 चारण कवि हमीरदास रचना के " ख्याति पुणा रिपोर " इति जदान में रचित कविता के राजस्थानी रिपोर जान के वाण ।

--- अगले पृष्ठ पर देखिए ---
पिछले पृष्ठ से चाहूँ -
का इस प्रकार वर्णन किया गया है :

"कर्मी लाखों कुछ कहाँगी। सुनपति बुझाई भार कहाँगो।
विचारण लघु बड़ी बड़ाई। कथाव विश्राम कहें बुझाई। ॥१३१॥
पिघड़ रूप अनेक अन्य शंका। गण गर्वतार नृसात उद्दिश्येन।
लघु मुकुटस्तों सेत पतार। मेद वैद संपन्न घटमाचा। ॥१३२॥
गांठ गांठ विगांठ उघांठ। ठीक वेदना मरम स्वायत।
सुन्दर वाणिज्य अनें सीहिणी। मंगल ग्राहण वारणान गाहिणी। ॥४८॥
चढ़ाइरा चौपास चामर | धनविभंग सुमा नालावर।
दोमक्षा मुखीज्या दीपक | रासायनिक केशुद्द रंगक। ॥१३३॥
भृगुकी कीर्तन मुनि। तोड़क महोत्सव चित्रित।
नीसानी केवल कीर्तनानि। कीर्तनानि अविस्त वाणी। ॥५६॥
ब्रह्म अमर क्ला ब्रह्मारम। परशुण गैर किसी नक चार।
जोतव वैद कहें चार। एस वृक्षावः पृथ्वीं। ॥५७॥
एक शरान नारायणिन। दोही भूल भाँत घोड़ा देव।
वौड़ी बांध कियानी चार। यह जलयुती जारिणार पारस। ॥५८॥
रापरें कुश नारायण। सुमति लाखों कुश कुश सुकुशण।
बड़ी लत्त सुननार विवालने। हलतौ कुशार लपतांति छापने। ॥५९॥
(सुनपति गुण पिघड़ हस्तिकल्प पृथे)
पूर्वक्तता विवेचन से प्रकट है कि सं १६९२ के आसपास से महाराज लखपतिसिंह के अध्यक्षकाल का देशीय सौपण आरम्भ होता है। इस सौपण की पृष्ठभूमि का निर्माण राजवाद के प्रसिद्ध विद्वान् पुनः आचार्य कवि कन्कनकुश ने कहा में कुलाये जाने से होता है। द्वारा रचित "अराव पत्रिका" नामक रचना के निर्देश से प्रकट है कि महाराज ने उनसे निम्नलिखित करके फुसलें सम्पादन किया और उन से काव्यशिक्षा प्राप्त करने के उपराय में "रेहता" नामक प्रांगण उन्हें दान में दिया। ५०-५१ कन्कनकुश ने अपने साहित्य छन्द महाराज लखपतिसिंह के राजवाद काल में लिखे थे, जो उनके शासनस्थल तथा उनकी परवर्ती रचनाओं पर उनके अभ्यास प्रभाव की समाप्ति की जा लक्ष्य है, जिस पर आगे बढ़ने का वितर्क किया जायेगा।

सन्न-काल पर साहित्या:

महाराज लखपतिसिंह का साहित्य-सर्वनाम काल सं १६९२ वि.से प्रारंभ होकर सं १६७९ वि.से तक के २१-२२ वर्षों का है जिस बीच उन्होंने निम्नलिखित रचनाओं का निर्माण किया:

"सुर तरालिनी" (सं १६७५ वि.), "स तराप" (सं १६०१),
"लखपति पत्रिका विकास" (सं १६८१ वि.) और "मदरम व्याख्या" (सं १६१५ वि.) इन चार प्रकाशों के अतिरिक्त "लखपति नी के समीप" मूर्दंग माधव के कुछ बोल तथा कहानियों में रचित मन उनकी पुनर्कल्पना है जिसके रचनाकाल का निर्णय निर्देश उन रचनाओं में नहीं मिलता। इन कृतियों का विस्तृत अध्ययन दर्शाता अध्यायों में किया जायेगा। इसके अतिरिक्त महाराज लखपतिसिंह ने अपने साहित्यिक प्रयासों को भी बढ़िया सफलता के साथ संबंधित किया था और यह भी एक स्वतंत्र अनुशीलन का अंतर्गत रखता है।

उपरोक्तकाल

६०-६ "पुज (कहानी) के दुर्गमाणा पाठसाला", पृ ४२।
मूल्यः

यह पूर्वकोनिद्रिष्ट किया गया है कि लखपतितिस्विंद्र के मूल्य समय का निश्चित उद्गीत उन्होंने आश्रित कौव बुध बुधुल ने "महाराज लखपति स्वर्ग प्राप्ति समय" की थी रचना में किया है। इससे संबंधित उपशुद्ध सामग्री यहाँ प्रस्तुत की जा रही है:

" आरस ईश्वरन विश्ल कुन भव्य के जब आये।
पूर्ण आपु लिखानि लिखे तब मन के माले।
लुत्व फिर तिथि समय दानेहुं जनन को दीर्घ है।
प्राणा नृता हित पुनः किये श्रनानि गुणि हीन्है।
तथा नाइ अनेक सुन्ता सहित ध्यान सदारिव को प्रवशोन।
पारित धनारि सब पिंड के बुलन तै ऊजवल कर्मि।" ॥२॥
संवत ठाकर्र कति तैल उपर तक बलियन हुव।
बेठ माधि घुनि जानिल पुराना तिथि चंद्रमि छुव।
आर अदोल बनाउ और नक्ता खोलेय।
बौं सुहरक जोंग राति घट घट गटरीय।
तिथि समय ध्यान फिर लिख कियो देश काहिन को दुरंग।
तान पाप आप नुम लयति समस सिधाओ सुम सरण।" ॥३॥

उपशुद्धिस्विंद्र शंदे से निर्विवाद रुप में निम्नलिखित तथ्य उपलब्ध होते हैं:

(१) मूल्य के समय लखपतितिस्विंद्र ५२ नवं की आयु के थे।
(२) संवत १४१४, ज्येष्ठ जुलाई पंचमी को बै स्वर्गवासी हुए।

अन्तिम अन्वयः

परिवारिक बीजन की चर्चा के अन्तर्गत यह दृश्यात्मक किया
प्राय है कि व्यक्तित्वीय अपने अन्तिम दिनों में रोगमुद्दत अवस्था में थे, और उनकी देख-दिखान के लिये कोई परिचार का व्यक्तिक उपविवरण नहीं रहता था और न तो कोई परिचारक भी। अपने रोगमुद्दत शासक के प्रति इस प्रकार का दयाहीन और कुछ अवस्था के कारण के संबंध में पूछने पर लेख को निर्दिष्ट हुआ कि व्यक्तित्वका शरीर कृष्णचरि अनेक रोगों के परिष्कार-
स्वास्थ्य अन्य उपविवरणुक्त होगा था जिसके लिए कोई जा नहीं सकता था। ५५ ऑलम तीन दिनों में व्यक्तित्वों के कारणों के चित्ती भविष्यत स्वतंत्र के नाम का पुकार सुनाई पड़ती थी, इसके संबंध में भी यह दस्तावेज प्रस्तुत है कि उस नाम व्यक्ति के पूर्ववर्तमान के पुरुष का था। दस्तावेज इस प्रकार हैः पूर्ववर्तमान में व्यक्तित्वों का पुरुष के पास अनुप्रस्ताव करते थे: लेकिन बार उनकी वायुशास्त्र के विषय में अपने पुरुष से प्रर्देश करते हुए यह निर्देश प्रस्तुत की फक्त कि जिसकी फहरस संख्या में इतना आर्दर हो जाता है उस क्रांतित्सक वायुशास्त्र का जीवन में अनुप्रस्ताव करते में निश्चित आर्दर प्राप्त हो सकता है। इस पर गुरुत ने कहा कि प्राक्त स्वाधीनता के परिणामस्वरूप तुम दूसरे नाम में क्रांतित्सक की इन बातों का अनुक्रम कर सकते हो। कहा जाता है कि व्यक्तित्वों के रूप में, उसी विषय में विधि साधु की जन्म हुआ था। क्रांतित्सक में वार्ता बातों का अनुप्रस्ताव कर उनके पश्चात् ऑलम दिनों में व्यक्तित्वों में व्यक्तित्वों अपने उनके पुरुष को उद्देश्य निर्देश करार करते थे। ५५ मृत्यु के पश्चात् उनके साथ पृथु रैली रिहाई के स्ती होने के लिये को पूर्वकार पृष्ठभूमी में निर्देशक किया जा पुकार है। इस घटना का निर्देशक राजपरिचार की उपबन गृहम पर स्थित "छतरह" के शिलालेख में अंकित है।

५५. कवि के कोरम्यर राजकवि श्री शंदूर्दास जी अपनी जे व्यक्तिगत कहाँ में लेकर को यह जन्म उपविवरण हुआ है जिसके लिए कह उनका आभारी है।

५६. व्यक्तित्वों के पूर्ववर्तमान संबंधी यह दस्तावेज भी राजकवि श्री शंदूर्दास आभारी ने लेख को सुनाई थी। तदर्थ यह उनका पुनः आभारी है।
विनेश्वर कवि
महाराज लक्ष्मण सिंह
फहराव लक्ष्मणसिंह अपने राज्यकाल के पूर्व से ही जिस
लोकप्रियता को प्राप्त कर चुके थे उसमें उनके अवकाशी एवं प्रदर्शन ग्रंथ
स्वभाव और दिलचस्प पूर्ण व्यक्तित्व के साथ-साथ उनकी सुंदर देहांत्रिक
का भी महत्त्वपूर्ण योगदान था। ५५ वे फहराव के तीन चित्र
देखे हैं जिनमें उनके व्यक्तित्व के विशिष्ट पत्रों का प्रतिनिधित्व करने वाले
चित्र को यहाँ प्रदर्शित किया जा रहा है। ५६ उन चित्रों में वे बालिका,
हृद-पूँछ, वैष्णव शारीरिक सौंदर्य से गुलाम दिलाई पड़ते हैं। उनकी
अंगों, घड़ी मूँ नाड़ा जाति के पुरुषों की लोकप्रियता मूल का योग्य
प्रतिनिधित्व करती हैं। ५७ सम्मान है फहराव लक्ष्मणसिंह को भी उन
समी पुरुषों की तथ्य अपनी प्रिय फूलों पर लाये देने का अधिकार हो। ६०
महाकालीन राजस्थान शासकों की तथा लक्ष्मणसिंह भी प्रसन्न चित्र में सिर
पर नौरिफ़ा ने कुछ मुख्य आंदोलन, कानों में कुंडल, गले में माला,
बाँधों पर बालू के, कमर में कठारी लिये हुए, कमरालंड बाध, वदन पर
चटपटल

५५ लक्ष्मणसिंह, वौ० ५, पू० १४१ पर दिखा पत्र उह काल द्रव्यत्व है:
"His handsome form, pleasing manners, open-handed-
ness and love of show made him popular."

५६ (अ) फहराव लक्ष्मणसिंह के ऐसे चित्र की उपजाव्य के लिये लेक ग्राहीन
चित्रों के द्वारा उनके साराभाई नवाब का आभार है।
(ब) लेख दो चित्र (१) "मुख (क़ब्र) की द्रव्यत्व पाठायी" में लगा
(२) "कमर,मुख,माला,हजारित्व", पू० २५ पर द्रव्यत्व है।

५७ "लक्ष्मणसिंह", वौ० ५, पू० १२

५० कही, पू० १९
वैदिक साहित्य के अंतर्गत हम यह देख आये हैं कि युजाराध दूर्दा लोकप्रियताओं का राजकीय-क्षेत्र में प्रचलित मुद्दकालीन परिस्थितियों में हुआ था। सन् १७३० ईं में सरदार दला के साथ दूर्दा का लोकप्रियता ने मात्र वीर वर्ण की अवस्था ही में साहित्य और साहित्य का परिचय दिया था। आलक्षाधिक शस्त्री और स्वतंत्रता तथा राजनीति के प्रति मात्र अनमल्ल से मात्र चोल और कल्याण, स्वचालित ही हम अवस्था में युजाराध लोकप्रियताओं में होंगा; जो ऐसे वीर-किंवदंती के रूप में उच्चतम एवं अपेक्षित भी होता है। इस घटना के पश्चात उनके जीवन में अन्य कई वीर-किंवदंतियों घटित नहीं हुआ। एक तो कारण यह था कि सन् १७६० ईं से १७६१ ईं तक के राजकाल में आत्मनिर्भर संघर्ष के अन्तर्गत दूर्दा आकर्षण का आमने आमने और दूरदर्शक प्रकाश के साथ, साहित्यिक एवं साहित्यिक प्रमुखों में ही आत्मिक संक्रिया रहे थे।

(२) उदार, युग-मात्रक और दायनी:

वीरता के उपरांत लोकप्रियताओं में उदारता और युग-मात्रक दायनी के ख्याति में विख्यात थे। कुमारजीवन से ही उनकी गुणानुरूपिता के और अपने युजाराध के अनुकूल ऐसी उच्च स्तर की उदारता के कई अंकानुसार प्रमाण मिले हैं। उनके राजनीतिक चारण कवि हिंदीदार रत्नें ने दूर्दा लोकप्रियताओं के उत्कर गुणों की इस प्रकार प्रसंगत की है:

"विदित न्याय खोल दायन सिनियंदा दायः।
उदार खुश एहो, नाखौं तमण जैहै।"
रन रूपित सूरै वैस वाण् बहु अनि थाट दहै ब्रविन वाण् इति ।
अध आज जोने कवि रूप्र कसे जानि नाम योसे ईन मोज निसि ।
कर ह्रास ब्राह्मण निति रोज नन्वे ठीकः तै अवतार जतन ।
वर्ग लान् कणीरा ध्व धार ध्वनिर्गुण इद मौर्या घणी गठि दरी ।।२६।।
झयपति कवि बम्बी लाख सामान सुकणा सुरजन साख ।
देहल सुल्त जाणि दालार कीरति बमर राजसदुर ।।२६।। "
( "झयपति घुण दिनाग " )

वे कवि एवं कलाकारों का मुखद्वस्त दान देते थे । कहा जाता है कि उनके
इस घुण की प्रशिक्षिता से आकृति होकर दूर-दूर से भी उनके कवि कलाकार
उनके पास आते थे ।

" पीहर परदेसीनि को निवाद नर को नाथ ।
कवि जन को हैं विमान पक्षिको धन मरि बाथ ।।२५।। "
( "झयपति प्रवर्ध प्राप्ति समय " : कुंदर कुशल )

झयपतिसिद्ध के साहित्यिक जीवन के अन्तर्गत ही उन के दुस्मृति थे जिसे अल्पकाल आर्य है कि
उन्होंने रामायण के प्रसिद्ध विद्वानों कवि कककुशल को अपने दरबार में
आवश्यकता थी उनके कककुशल की निद्रावास और दूर दूर दूर दूर दूर दूर दूर दूर दूर दूर दूर दूर दूर दूर दूर दूर दूर दूर दूर दूर दूर दूर दूर दूर दूर दूर दूर दूर दूर दूर दूर दूर दूर दूर दूर दूर दूर दूर दूर दूर दूर दूर दूर दूर दूर दूर दूर दूर दूर दूर दूर दूर दूर दूर दूर दूर दूर दूर दूर दूर दूर दूर दूर दूर दूर दूर दूर दूर दूर दूर दूर दूर दूर दूर दूर दूर दूर दूर दूर दूर दूर दूर दूर दूर दूर दूर दूर दूर दूर दूर दूर दूर दूर दूर दूर दूर दूर दूर दूर दूर दूर दूर दूर दूर दूर दूर दूर दूर दूर दूर दूर दूर दूर दूर दूर दूर दूर दूर दूर दूर दूर दूर दूर दूर दूर दूर दूर दूर दूर दूर दूर दूर दूर

" महाराव झयपति द्वै जब हि कुमार पद ।
तव पठवै पर प्रीतिको बही पृथ्वि हिंय घुण हइ ।
कककुशल निवासि निवासि निर्वासि ।
हुया कुलाई दै मानि भूमि राजा घुण राजी ।
तिन अग्नि आप मम्माक धरि । रेहा ग्राम कक्षीर में ।
दीनों दुधार देश तन्मा । घुण घुणत रज लोः हि ।।२५।।

( "झयपति घुण दिनाग " )
बढ़ाकर पद भूप दिव्य | पुनि आंधि पोशाल | 
प्रगट शुद्धिति क्रिया में पद बिदिक्त बाल |।१०१।। "
( "कैगर जस" , सीजन विश भूमि )
एक अब्जे ग्रंथिरो की तरह श्लोकलिपिक कविता एवं क्लासिक जी की अद्वैत परिक्रण-प्रक्रिया से सम्पन्न थे और उनकी स्थायित्व प्रमाण दान देते रहते थे :

" शिक्षक बुधि के हीरकन । मौं हुई उपहरे ज्ञान ।
जिम की श्लोकलिप्त ग्रंथिरो । कीर्तित करत प्रमाणन ॥। "
( "श्लोकलिप्त जस रिंहु " , बंद १२)
कवियाँ ने श्लोकलिपिक की इस दानवीरता की प्रसूतिव भी प्रौद्योगिक दान देते रहते थे इस प्रकार की है :

" सागर गागर चो भर अवनि उजागर पास ।
दान लहरि चम्प लहरि तै अनु दिन करत अन्धकार ॥। "
( "श्लोकलिप्त जस रिंहु " छो ९६ )
राज्यसम्मिति-साहित्य के प्रसिद्ध विद्वान जैौधर निवासी श्री दीर्घराम की भी लाख ते महाराव श्लोकलिपिक की इस दानवीरता के विवाह में विषय करते हुए इस लेख को यह प्रक्ष्ण किया था कि, "क्या यह विचारणीय नहीं है कि श्लोकलिपिक ने अपने पिला के प्रति जो अन्धकार किये थे उनके छिपाने के फिले दान देने की प्रमुखता अन्वेषित की है ? "

देखें

१५1 लेख के साथ हुई कवियाँ में भी लाख की ने प्रसिद्ध कविता अभ्यर्थियो मानने का इसी प्रकार की मृदुता का निदेश करते हुए यह व्यत्यास 
था कि रहोम ने मे भी फिट्भुल्य को छिपाने के फिले दानवीरता की
— आगे देखें
महाराज ख्यातिसिद्ध के व्यक्तित्व को इस मनोवैज्ञानिक
dृष्टि से अलग देखा जाता है। निम्नलिखित कथा के आधार पर
उपर्युक्त लेख निम्न रूप में होता है:

(१) जीवन के अन्तर्गत हम देख ले हैं कि महाराज ख्यातिसिद्ध ने
अपने पिता महाराज देशसंगीत की कैद अवघ्नित की था, परंतु
उनके प्रभावित स्वरूपात्मा की दी थी; इसका हो नहीं उनकी
इच्छानुसार वहुत बड़ा धार्मिक अनुष्ठान भी किया था।

(२) दान देने की प्रश्नति का प्रेरक कल, ख्यातिसिद्ध का साहित्य पूर्ण
कल्प प्रेम था, न कि कोई गुणाहित कृत्य कर बैठने के बाद की
पश्वाताप पूर्ण मनोदेशा।

(३) यह हम देख ले हैं कि उदारता, गुणाभावकता और दान-
वीरता के ऊच्च गुण महाराज ख्यातिसिद्ध में उपजातकर्मना के ग्राम
से ही विख्यात थे, अपने पिता को कैद करने के आर्थिक सन्
१९४२ के बाद नहीं दिखाई पड़े।

चंद्रगुम्ब

पिले पृष्ठ से चारू—

प्रश्नति को खूब अपनाया था। उन्होंने यह दौड़ा भी उठाकर किया
था:

" काया से पैदा किया, जिसे मार्धा जाय।
हर नई भरी हुयी, हर लानालान चुदाम।।"

(" दयालुदास री स्थान", भाग २, पृ १४, सं १०
दसरध शर्मा, ग्राहित स्थान: अनुप संस्कृत लाञ्चेटी,
वीकानेर)
(3) विलासी, शुक्रवार और रविवारः

जैसा कि वह कथा किया जा कुछ है कि कुछ के इतिहास एवं सन्न्यास में महाराज लखपतितिंद्र के एक विलासी नामक के रूप में अतिक्रम प्रसिद्ध निम्न है। महाराज के रूप में यह प्रसिद्ध है कि वे वास्तविक, संवैधानिक आदि मृत्युमार्गों में सारी रात बिता देते थे और दिनमर लोककर्ता बाजे दिन में नष्ट थे। ३२ उन्होंने कभी कैसे किया कई, कलामक और लखी लाठ बनाने की जाती थी जिसे आज भी "लाखाजाई घालियो" कहा जाता है। ३३ जैसा कहा जाता है कि उस लाठ पर अल्हूव बढ़ाकर गड़बड़ रहता था जो इसी नम्र रसोई का बना होता था कि उस के पर मात्र ही वह समक्ष ही जाता था। उस लाठ को अल्हूव भुला करा, कारण गणरो में भुवियान लिखा जाता था! उस पर बड़ी सुंदरी से सात रंग चढ़ाए जाते थे। उन रंगों पर मदरी तैकती दबारा इसी कलामकला से आंदोलने वाले हुए अंग निकाले जाते थे। कि सात में यह किसी भी प्रकार के ही विचार में प्रदर्शित किया जा सकता था। महाराज रात्रियाँ से लाठ पर सोना पहले करते थे। उन्हीं इस कलामक और लक्ष्मी लाठ को ऐसा प्रसिद्ध और लोक चाहना प्राप्त हो जुनी थी कि नगर के विशेष लोगों में उनकी पुराणी पहाड़ी लाठ को बुरीदेवी की रात में होट लगती थी जो उसे उनके दाने बरीदेवी प्रागिन्थरूप समकालीन जाता था। इस प्रकार अपनी किताबी सामग्री को भी बहुत बड़ी आज का साधन बनाने में लखपतितिंद्र की अद्वितीय ही उद्देश्यों से होती है। ३४

"कछ देसरो रूपो इतिहास", पृ.५०

"माँड़ी (कछ) के प्रसिद्ध विज्ञापन डो. मनोदी ने लेख किये "लाखा शाई घालियो" के बारे में विस्तार से बताया था। अतएव ईस्व नाकारी के लिए लेख किया आपका आमारा है।

"मुन के दरबार गढ में जाये हुए पुरातन आईना-मधु के एक छोटे हे कमरे में आये"
फारान व्याप्तिसिन्ह अपनी इसी बिकासिता के कारण अन्यथा लक्ष्य हो गए थे। इसका सबसे बड़ा उदाहरण उनके दौरान विदेशी पैमाने पर क्षेत्रांत गया आईना-महल है जिसके बनाये गए में अपनी हृदय को रो खराब हुआ था। आईना-महल का मुख्य होटल उसके दूसरे महत्व पर निखट है।

इसकी दीवारें भोले संगमस्थिर की परिसर हुईं हैं जिसका चमककर बॉब्बी होने के कारण इस महल को "आईना-महल" कहा जाता है। यहीं से दिनां में इस होटल के बाहर के तीत्र प्रकाश, व्यास तथा जू हो जु के चारों ओर के लिखे उसके मुख्य दूरार के बंद रहकर अंधकार बिखरा जाता था और खड़े हो उसे सुमार्क किया गया। इसके लिखे विदेशी कौन दृष्टियों में मानवात्मक प्रवासित की जाती थी।

आईना की जाय तो यह है कि उसके पूरे फ़ारस को पानी से भर जाता था।

कलेवे के लिखे दीवार की लक्ष्य छोटा-गा रास्ता गाया ही था और बाहिर के प्रदेशांकों को पहुँचने के लिखे लुधी के छोटे-छोटे पुल बनाये गये थे।

इस प्रकार आईना-महल के इस मुख्य होटल की जाता नुकसान बनाया गया था। ऐसे बदल और सुलह होटल में महाराज व्याप्तिसिन्ह का दरबार लगता था इससे सम्पूर्ण, कुछ नए काम में लाभ को रजिस्तान की सहायता होती थी।

हो तो यह महाराज व्याप्तिसिन्ह ने ऐसे सुलह वातावरण में अपनी कामना-रचना की हो। इस प्रकार आईना-महल उनकी अपेक्षा प्रवृत्तियों का केन्द्र था। यह महल जीव भी बनाया गया और उपयुक्त तत्वों का साहस उपरि करता है।

एक और महाराज व्याप्तिसिन्ह की बिकासी प्रवृत्तियों सत्यांत सर्वत्र भी तथा दूसरी ओर उनके मुट्ठ में स्थूल मनोरंजन के स्थान पर उद्योग

पिछले पृथ्वी से चटाव —

महाराज व्याप्तिसिन्ह का स्वयं-काहिर है जिसमें उनका यह लोकप्रिय खास जैसे तैयार नहीं देखा है जिस पर उनकी तत्वांत, छाया और चक्कर पड़े हुए हैं।
प्रकाश के आकारीय अवस्था की बौद्धिकता और सूक्ष्म योद्धाओं दृष्टि निहित थी। महाराज ने नृप्स संगीत के श्रृंखल की पूर्ति के लिए पच्चिमी गायिकाओं एवं नाटकाओं को राज्याध्य दिया था:

"सुपर रात्रिवेक जलपन हुम | अन्नी जलन बलिया।।
लदपा लवलगति के परम | पाटि गायिन किसन।।"

इस सभी को उच्च प्रकाश के आकारीय संगीत के अवस्था का प्रभाव उन्होंने बड़े खरीड़े पैमाने पर लया सुरचित कर रूप में किया था:

"अध लवलगति आवरें जी | मुंदित मैने पुराना।।
पुष्प बुख्पे प्रहर करी चादर अरति चिथू आना।।19।।
महाराज आये सुमन | सुल फलकर चढ़े सेंग।।
सप्तिकर रात्रि समृद्धि | संगीती सत्राच</doc>

आप उम्मे अरथम घरि शिल नाट्याओं चुक साथ।।
वा पद पंक्त रेनु कहूं आई इन्द्र के हाथ।।23।।
ताम्पेन न ज्यों तान्मै | मानत पुनी महत।
संज्ञान में त्यागे सुपर | महाराज ने मतिकंत।।23।।
महाराज की पुराण मुख अंगुरीम नरत नेह।
प्रकाश कि न प्रकाश अरति अरति गति यह गुन संदेह।।23।।
रत्नकर के मत मतचर।। खिचों खेले मुख आना।।
निमुन करी सब नाटिका | बोधी किलो बजारने।।24।।
त्याग जाने तालीम के।। सात लला रंग सीम।
फिल उपारी प्रति अरज।। तेज होत तालीम।।24।।"।

( "स्पर्शित जस्हमु " कवि कुंवर कुर्लू प्रथम लोग।)

महाराज की रसिकाओं में विज्ञानाविज्ञान स्मृतिका के स्थान पर वाणिज्य गायिकाँ एवं अन्य सदस्यों का मानवकल्पन योग्य था। उन्रे।
"सागर से ञामिर सुम अरु प्यन आगर अंग
रसिक मये श्री कृष्णा से रति अीजा खरीग। ॥१०॥
"

(*"ख्याति स्वर्ग प्राप्ति समय", कवि खुर्रम कुशल*)

(४) जिवानिशु और विज्ञानावांशारी:

महराज ख्यातितिथि स्वभाव से ही जिवानिशु थे। बाहर की दुनिया के विकास में जानकारी प्राप्त करने के लिये वे ख्यात स्तर में रहते थे।

यह आत्मसम्बन्ध ही था कि रामसिंह माधव महराज ख्यातितिथि का आध्यात्मिक प्रशिक्षण करने उनके द्वारा आया। जिनकी विश्वासणावही और विविध इतिहासिक एवं उद्योगों के बारे में जान का आधार महराज को मिला। अर्थात् वर्षों तक विद्वानों के निर्देशक कर आक्षेप कर द्वारा, रामसिंह ने बाहर संसार के प्रति जिवानिशु के विश्वास को उद्धीन्त कर दिया था। परिणामस्वरूप विद्वानों को ख्यातितिथि सम्बन्धित सम्पादनार्थ अपने प्रति दरबार में सार्वाधिक लोक विद्वानों को विश्वास ब्रह्मण ऐसे उपहार देते थे।

"अंगीरे आराध्य अभिस्म बहुन विद्वानों और
मैं किसनिः में निर्दिष्ट धर्मिन राठ भवीर।"

(*"ख्याति स्वर्ग प्राप्ति समय" अं ११*)

महराज ख्यातितिथि ने रामसिंह माधव के मार्गदर्शन में अकेले प्रकार के इतिहासिक एवं उद्योगों का कच्चें में प्रारम्भ कराया। तत्कालीन कवियों ने इसका इस प्रकार कविता किया है।

(५) "चक्रवर्ती ख्याति चुराओ अहुँ नानु उपहार।
मार्गिन कीनाँ हुलके मध्यन गुन मंडिर। ॥१०॥

उत्तर-उत्तर

८५ "दो ब्रजसंह हिंदू स्फूर्ति कच्चे", पृ १३७
झैसे वैदिक किनारे की विविध वास्तव बोध।
विवरण तब करने वाले को तौलणा को तत्पर सोध। \[204\]
बुनिवाले सरस वनात को बहुर अनाती रोग।
साँग करन रेखा तन गात विचित्र बौद्ध। \[205\]
तत्क अति चीज को तथा करन विच्छेद केल।
वाणिज्य रस्म निकोर वो दूरजीवन दिग्गज। \[206\]
धारण धनी की हवा बैदर बहुत पहार।
जमीरना की मुहर सौ बैट भरवायल बार। \[207\]
लैस्ट तोध बालु धरन जमी बहुमूल।
नग परस्पर परस्पर मनुष बीज हिरंध बारेम। \[208\]
मैं लोहे मनसे पूर्ण परम चंद्रराज की कुंतित।
गान हयात हृदय द्वार चंद्र धरक दर हरित। \[209\]
मार्थिम कै इन्हु नून मै आए मार्थिम राम।
सिंघ छब्बा ता ते मही कियोऽ सिंघ कै माम। \[210\]
पाई दुल मार्थिम की रहू हमेश हरित।
साँग सब हुंस मरों को मारे पुंज धूरित। \[211\]

"लक्ष्य मूलक " ( प्रथम ८९ )

(७) "जै ने हुंसर जगत में लक्ष्य मिले ते ते लीन।
आप हुंसर सब वह कल्पन्त बह कै लीन। \[166\]

( लक्ष्य चार शार्म खा लेना )

उपरोक्षित लक्ष्य मे कह स्पष्ट हो जाता है कि महाराण लक्ष्यतिसिंह की निशाने को बैठा तर्क निरंतर नहीं थी जबकि उसमें सुरक्षित, गौरीर और 
अलर्थस्थ योजनाविकल्प ततु विद्रोह बनाने के लिए उत्तेजना पहुँचाई पड़ता है कि उद्योग जैसे 
क्लिरिक एवं राजकीयों को प्रभावित करना था।
महाराज ने अपने कौशल्यालमंक किताबें में चीज़-जस्तों का सृप्रह अपने मनोविनोदार्थ सिखा था जो आज भी "आईना-महल" में सिक्का उसके सामने एक पुरातत्त्व है, जिसे ले जाए तो उसे स्वयं देखता है। उस संस्कृति में संगीतादात्मक विविध वाद्यावली, अनेक ऐसे चिंता जिन पर सब्जे आमूला हो जाते हैं, डब, अंकों से और प्रेमच पाठार्द्ध कांच के कन्न द्वारा यात्रिक सिखाते आदि हैं।

लखपतिसिंह का विखायन बान की विविध शास्त्राओं को आसान बनाएँ दिखाने का प्रयास है। एक और उन्होंने चिन्ता तुझे उद्धारेदारों को प्रत्यय दिखाता था और दुखितों और साहित्य, बिन्म संगीत आदि के साहसी अवस्थान की विभाजन-दीर्घा की व्यस्तता की है। उनके व्यक्तित्व के इस पक्ष को उद्धारित करने का प्रयास मिला है। जब वे व्यक्ति, ज्ञान, साहित्य और संगीत आदि के प्रति लखपतिसिंह को प्रेम था:

(क) "बैठ पाठ व्याकरण पढ़े है ज्ञान पुराननिन को वाक्य रसख्य चित्रकूट हुने कुराननिन निषेध भावना पढ़े कर जवालाई नीकी सात अव्यक्त संगीत अनुज किसापारूप की। उसे हुनान लखपति बोले गये आप नूतन अमर मति। पुस्तक अपने भरी प्रेमवान भर द्वारा राजित है।" ( "लखपति स्वर्ग प्राप्ति समय " : बंद ४४ ।

(ब) लखपतिसिंह के विखायन-प्रेम का भी इस प्रकार उल्लेख मिलता है:

"पाठ फर्लांग के नक्सलदार विद्वान स्ह्रृंगार ज्ञान अक्षम। राज की-ने मन भायें हैं कुलन क्षारित-पृथक हैं।"
क्लक्नी तैः रेख रंग परदानी रंग के दिखाये हैं।
डेें के कुमारन हैं ठाटे ए अलौक दुर्ग जिन्हें
हमार चूह काम ही न आये हैं।
व्यायाम दिखायी गयी की विचाराष्ट्र केरी
माफिन तिरंग सड़क सूरन कौं तिरंग से बनाये हैं। ॥ ६१ ॥
(" गोहड जी राज अस " : कवि जसराज।

(१) संगीत-शास्त्र का आदर्शवाद उन्होंने प्राप्त किया था।
संगीत-शास्त्र विश्वक प्रसिद्ध प्राचीन प्राप्त "संगीत रत्नाकर" को उन्होंने
रचना काव्य-वेदांि किया था, जिसकी विस्तृत चर्चा उनकी कृतियों के अध्ययन
में की जाएगी। उन्होंने संगीत-शास्त्र की चिनता को जो व्यक्तियों
करवाई थी उसका उल्लेख इस प्रकार किया है:

" स्थः बाने लालिम कैः सात लाण छूँध सीम।
कित उपायेऽ प्रति वर्ण। डेें होत लालिम। ॥ ६२ ॥
(" लक्षपति लससिद्धं " : चौद ६२।

(२) कवि:

महाराज लक्षपतिसिद्ध के कवि-व्यक्तित्व की सृष्टि कार चर्चा
प्रसिद्ध लोच-प्रवास का प्रमुख विचार ही है जिसका व्यक्तिप्रेय उल्लेख आयाती
अध्ययन में प्रसिद्ध किया जाएगा। यहाँ उनकी कविता में प्रसिद्ध एवं
उसके विचार में संकल्प भाषाए भाषाए जा जाता है। कवि के इतिहास
के विदेशी शब्द ने लक्षपतिसिद्ध के दृष्टान्त किये जा रहे हैं।
"It was here that Maharaor Lakho composed the
poems which are still read; watched the dancing-girls

66 वही, पु. 182-83.
whose classical art his patronage did so much to revive and listened to the Bards and Charans who had perfected their study of Vrij Bhasha in the College which he founded.

उनके समकालीन कवि ने भी यह दिखा है कि :
" पिमल भाषा पढ़े कवि कविताए नीली के सात अद्वाय संगीत अनुलिपि निराहार है।"

(६) साहित्य-प्रेम और संस्कृति :

साहित्य-प्रेम एवं विद्वद्व साहित्य के अवधारणा की स्थायी व्यवस्था के लिए किसी भी कार्य महारान लेखपतिसिंह की अप्रोक्ति के लिए कारण है | उनके द्वारा चित्रकार, संगीतकार एवं विद्वद्व कर्मचारियों का उद्देश्य किया गया है | इससे उस प्रतिकृति होती है कि वे बान-विवाह की सास्त्र-वित्त के पक्षपाती थे | काव्य-साहित्य के स्थायी अवधारणा के लिए उन्होंने पुल में ब्रजमणि पाठशाला की स्थापना कर चुकाई थीं | अन्यतः इस पाठशाला के सम्बन्ध में यह कहा जा सकता है कि इसमें कवि विद्वद्वियों का ब्रजमणि के प्रसिद्ध काव्य शास्त्रीय प्रेम का अवधारणा करवाया गया था | निश्चितता काली-वध के बाद उद्धृत परिभाषारूप के बाद विद्वद्व को कवि-पदकों दी जाती थी।

(७) चित्राभा का मक़ान :

महाराज लेखपतिसिंह के समझ जीवन एवं कृतित्व को देखते हुए उनके व्यक्तित्व में चित्राभा लगे बाले कुछ तत्त्व भी पाये जाते हैं। एक और उन्होंने साहित्य-संस्कृत चिन्हादि विद्वद्व कर्मचारियों के लोक संस्कृत रस दिलाया, दूसरी ओर उन्होंने अनेक हुमारे, यथाहृत, कारीगरों को प्रधानाध्येय
हि नहीं दिया वरनु उनके सिखाने की स्थापि और खौफ़ी व्यवस्था भी 
की। एक और उन्होंने कवि, संपीतकारा, नरकिया को राज्याध्य 
दिया लो दूसरी और रामसिद्ध मालय जैसे कारकार को भी प्रका 
दिया। 
अधी प्रकार तै कलासी होते हुए भी भक्त थे। उनकी रचनाओं में एक और 
"सुर तरंगिनी" और "रस तरंग" जैसी दृश्यार और सौन्दर्य विभाजक 
रचनाएं मिलें लो दूसरी और "कामति माति किला" और " सदा 
किरण व्याह" जैसी वैरास्थ और माति-समर रचनाएं भी। इसका ही नहीं 
कुछ पुनःरूप लेखकों को पवित्र लो यह विश्वास हो जाता है कि लघुपतिसिंह 
के पास निकट और रचना की तीव्रानुगमति का सक्रियता परिपक्व हुदा 
भी था। उनके विशेष व्यक्तित्व को प्रकाशित करने वाले उनके रचने कुछ 
बहुत दृष्टि है।

(१) सुरता क्यों पाड़ होते न प्र यो करी जानत दूरकेत मेरी।।
काहु पे रीतित काहु पे गोलत।। धंग अजान गुप्तन परे री।।
पे श्रीमाएं ये मोह के श्रीम में मुड़ी के अंगे से घाँट जाओ री।।
काह ने जात पे हीर उपरे होते रहो रहो जे छात्र की ठोरी।।

(२) कौन को लोहो कौन की माल बो 
कौन को पृथ रंग कौन की नारी।।
कौन को नाथ मुख कह देंगे कौन को 
कौन को या देंगे कौन की नारी।।
माहे के जात में आठ परे सब 
अपरी आप उठाएक भारी।।
नाथ के हाथ है जात को 
श्रीमान कहें अमीर मान कहारी।।

इस रूप के प्रकाश में उन का व्यक्तित्व परस्पर विविधी तत्त्वों से शुक्ल
दिलाई पड़ता है। यह उनके निजी जीवन का परिणाम था, व्यक्तित्व की मूल जड़ता का नहीं। इन छद्दों को पढ़कर ऐसा अनुसार किया जा सकता है कि लघुपतिसिंह ने अपने अंतिम जीवन काल में ऐसे प्रकार की तोपरी रचना एवं मिलनों की अनुभूति की होनी। मनोवैज्ञानिक दृष्टि से ऐसा जाना तो अस्तित्विक सिंही जीवन व्यतीत करने के परिणामस्वरूप यह वैधानिक-प्रभाव अवश्य बाया है।

(४) दिख-मक्ख:

लघुपतिसिंह दिख-मक्ख थे, यह लघु भी उनके ही एक छद्दे से प्रभावित होता है:

"काहुं के इच्छ है जानकी-साथ को।
काहुं के इच्छ सुदा मीरा-धारी।।
काहुं के इच्छ विरची-मन्द हो।।
काहुं के इच्छ मलाहीं को बारी।।
काहुं के इच्छ हो पीर पेमदीर।।
काहुं के घर मे हुस्नारी।।
साच कहे लज्जवर कहे।।
फिलनाथ के द्वार है बात हमारी।।"

अपनी दिख-चित्रकृत के प्रभाव स्थाप उन्होंने "सदारूढ़-व्या" की रचना भी प्रस्तुत की है। एक विश्वसनीय मत के अनुसार ही लघुपतिसिंह ने मौर्य-विलास का दर्शकार अपनी रचना "लघुति मतिक विलास" में अनेक स्थलों पर ही व्यतीत किया है जिस पर विस्तृत चर्चा करना अन्य अध्यायों का विलास है।

इस प्रकार लघुपतिसिंह वीर, उदार, गुण-ग्राहक और दानी; रसिक, विलासी एवं खुशी; विगदु और विशालबहुव्यासी; कवि, शाह-
"दार्दी की सीखौं दार धारी भोग सीखौं आय बिहा।
दार्दी का जोगान ने सीधा है भगवान जू।
रघुवी की सीखौं म्यान कवि कविताएँ सीखौं आ औं
पीढ़त मुर्दावताई सीखौं कार कर सेव जू।
रागी सीखौं राग और रश्मि रस्कार सीखौं
शिवाई विषादगीरी सीखौं अहेंद्र जू।
कुरारौं हुनारी ते सीखियां है हुनर को और
कहें सिद्ध लक्ष्मी गुणदेव जू।।"

("लखपति कसासिंह"): छठ १९२५

कवि कुंवर कुशल ने अ लखपति सिंह के समग्र व्यक्तित्व की एक साथ उद्धारित करते के रिये यह कल्पना की है कि एक बार लक्ष्मी जी और श्री महाकाश के बीच हजार द्युम था। लक्ष्मी जी ने कहा, हम ने घुटनी पर जो जो नह भागने उनमें उदार, सूर, दारी, पीढ़त, चुरु, हुनरवान, अत्यन्त इकारी, ऊपरारी से सबी गुण विशिष्ट एक नर में नहीं जा ची ये कहें।
इसके ऐसा विवक्षण कर जाए करते की लक्ष्मी जी ने मायावत से विद्वान की। मायावत ने हुकूमत हुए कहा कि मुझ में लखपति उनका भार है। वह मुक्त राज्य है और निर्देश सदलूण नगर में है, उसमें है। वह मुक्तकर लक्ष्मी जी ने लखपति को विशिष्ट प्रकाश शीघ्र बुझाने की क्रियात्मक की।
मायावत ने दाकर्के को आशा दी कि तत्काल मुझ से लखपति को महान है आप।

87 द्विभाष्य: "लखपति स्वर्ग प्राप्ति समय" कविता कुंवर कुशल, छठ सं १३ जून से १२
उपरोक्त विवेचन से महाराज लखपतिसिंह का वह मुख्य व्यक्तित्व प्रकट होता है। उनकी लोचक्षणित गुरुराजकाल से देकर उनकी मुद्दे के उपरान्त भी दौरे करके ली रही होगी ऐसा अनुभव कि या दर्शाया है। " महाराज लखपतिसिंह के समय व्यक्तित्व से गुजरात के हिंदी धार्मिक के पवित्र, योगदान एवं संबंधित के द्वारा बड़ा उद्देश्यीय कार्य किया था।

उन्होंने अपने जीवन के व्यस्त-पश्चिम को समाप्ति के विकास के द्वारा इस प्रकार, सुलभ्योजित रूप में, प्रस्तुत किया कि कथौं के ही नहीं, गुजरात, राजस्थान आदि प्रदेशों के कुछ-कुछ संस्थापक वाल कवि उनसे मुहर्देशित तथा ज्ञान-निःवर्ता एवं उपयुक्त दर्शाए?

अन्य तथा किसी काव्य-शास्त्रीय समस्या के अन्दर के नियोजक मुम्बई के व्यापक प्राप्ति वालों द्वारा प्रणवस्मृत माना जाता रहा है, जिसका उदाहरण पूर्व में दिया गया है।

इसी लखपतिसिंह के जीवन के उच्च क्षेत्र के साहित्यिक कार्य का मुख्य ही समान जाना चाहिए । गुजरात में इस प्रकार का राज्याध्यक्ष एवं कुक-किरदार प्रदान करने के लिए एक अभ्यास ज्ञानिशिक्षा ही शासक हुए। गुजरात में रीतिवादी सूक्ष्मतिक के जो विकास हुआ, कुक-प्रतिमा को जो महत्त्वदायक

"अब बहुत देशी परदेशी प्रदेश के महाराज लक्ष्यते का आदि करते हैं।

प्रतिव बारसि मास के मार्ग सूने। अग अग मास बिहिन बिहित स्वस्त।

गारी गारी नहीं गारी फसा गारी स्वस्त गह, ना देने सुनी के केरूकी के रातियादिन श्वेति रह जाये।

— आगे देस लेए
प्रोत्साहन मिला, इसका कारण अध्यपितक के द्वारा प्रस्तावित की गई 
क्रमावधी पाठशाला ही थी। कच्चे जैसे अविन्दी विद्यार्थी में अध्यपितक के 
द्वारा किया गया अह कार्य अपने आप में एक साइक्लिक दृष्टि से अद्वैत एवं 
स्थायी महत्त्व का है।

महाराज अध्यपितक के इस पूर्वस्थान जीवन कार्यों का मूल धार 
था उनका गुण-सम्पन्न ऊर्ध्व, क्ला-प्रेमी, वाय्यो-मूर्छ व्यक्तित्व। उनमें 
इन सब गुणों के होके हुए भी यदि शास्त्र-प्रेम से आकर और गुण-संबंधक 
भौतिक दृष्टिकोण न होता तो उनकी सबी साहित्यिक प्रवृत्तियाँ तात्का- 
क्षमता तक ही सीमित रहती। इसीलिए महाराज अध्यपितक के आज का 
साहित्य-इतिहासक विकस्मुल नहीं कर सकता, क्योंकि उनके इतिहास 
के उल्ले व्यापकय गुण के कारण ही।

यदि महाराज के जीवन और व्यक्तित्व को और अधिक 
अर्कृत एवं सहायक परिस्थितियाँ निर्मिती या ऐसी कोई पूर्व-परंपरा निर्मिती 
जैसी उन्होंने मानचित्र के रूप होने निर्मित की थी, तो क्रमांकी आज उसका 
अर्कृत प्रभावी परिणाम हुआ होला।

00000

पिछे पृष्ठ त चारू —
सिंव और सफल तारंग निकाली बदली। कतनी कतनी उसी के की कहीं
किसी न रहै रिति प्रमा नै निर्दित रात्रे अध्यपि नृढ निर्देशै।। "
(“अध्यपि स्वर्ग प्राप्ति समय,” छंद ५० ६९)